Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017 RNI No. CHABIL/2000/3469

हिन्दी/अंग्रेजी मासिक पत्रिका

दीन बन्धु सर छोटूराम

जाट लहर

जाट सभा, चण्डीगढ़ के सौजन्य से प्रकाशित

o"kZ 15 vad 01 30 tuojh 2016 eY; 5 #i;s

प्रधान की कलम से

दीनो के मसीहा सर छोटू राम

डा. महेन्द्र सिंह मलिक

खेती करना व पशु पालना कोई नहीं चाहता क्योंकि दशकों से बताया जा रहा है कि खेती घाटे का सौदा है इसलिए 40 प्रतिशत किसान खेती छोड़कर शहर चले गए या आत्महत्या करने को मजबूर हैं। किसान के इस मर्म को सर छोटू राम ने समझा और उसके जख्मों पर मरहम लगाने का प्रयास किया। उन्होने कहा था कि श्रृष्टि का दोहन उतना करो कि जिससे आने वाली पीढ़ियां हमें दोषी ना मान लें। छोटू राम से दीन बंधु कब बन गए किसी को आभास तक नहीं हुआ। उनकी कथनी और करनी में अंतर ना था। सोच में मानवता की सेवा और समर्पण था। इसी लिए उन्होने भाखड़ा बांध के निर्माण को मूर्त रूप देने का प्रयास किया। अब पानी का दुहन इतनी गहराई से हो रहा है जहां कुदरत के पानी की री-चार्जिंग ना के बराबर है।

दीनबंधु किसी जाति-पाति या वर्ग विशेष के नहीं थे अपितू मानवता के पुजारी थे। उन्होने खेती किसानी को बढ़ावा देकर मानवता पर उपकार किया। उसका प्रत्योत्तर उनके जीवन काल में नहीं मिल सका अन्यथा परिणाम कुछ अलग होते। वे एक पूर्ण संस्था थे। एक ही वक्त में वे वकील, शिक्षा विद, राजनेता और किसान थे।

उन्होने अपनी तन्खाह से किसान कोष और शिक्षा कोष शुरू किए ताकि लोगों को जागृत किया जा सके और दबे कुचले तबके के लोग आगे बढ सकें। परिणिति छुपी नहीं है-पाकिस्तान का एक मात्र नोबल पुरस्कार विजेता अब्दुस कलाम उन्ही के कोष से पढ़ा और उसने अपने पुरस्कार पर कहा भी कि अगर छोटू राम ना होते तो अब्दुस कलाम इस मुकाम पर ना होते। अत: पाकिस्तान में आज भी दीनबन्धु सर छोटूराम के नाम की ज्योत प्रज्ज्वलित रहती है। वे सदैव पुकारते थे मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना इसलिये उनकों बडे स्नेह व इज्जत के साथ छोटूखान के नाम से सम्बोधित करते थे।

उनके पदचिन्हों का अनुसरण करने से ही समाज में व्याप्त अंधकार को काटा जा सकता है। उस महान आत्मा को जाति-पाति, धर्म, राष्ट्र के बंधनों से मुक्त कर देखा जाए तो आज भी किसान, कामगार और काश्तकारों का कल्याण हो सकता है। भाई भतिजावाद की कुप्रथा से छुटकारा मिलेगा। आज हम आर्गेनिक खेती की बात करते हैं जो वे दशकों पूर्व कह गए। स्त्री शिक्षा पर बल दे गए। बेटी बचाओ का संदेश अपने जीवन पर ढाल गए। आज स्वच्छ भारत एक नारा हो सकता है। सर छोटू राम का जीवन सरल सीधी और प्रेरणादायक है, था और रहेगा। किसान एक बेजुबान प्राणी है जिसे मेहनत करनी आती है। अपना हक मांगना नहीं बेजुबान से जुबानें बने।

उनका कथन था कि भगवन इतना दीजिए, घट-घट रहे समाए, मैं भी भूखा ना रहूं, साधु न भूखा जाए। लेकिन कृषक समाज इससे भी अधिक दयालू है। खुद भूखा रहकर मानव सेवा में जुटा है। इस समाज की विडंबना है कि इसे बोलते वक्त, वक्त की नजाकत समझ में नहीं आती और दुश्मन की पहचान नहीं कर पाता। इसीलिए इस समाज का कोई वाली-वारिस नहीं रहा लेकिन दीन बंधू सर छोटू राम इनके मरहम को जानते पहचानते थे। उन्होने अपनी मृदुल एवं कुटिल भाषा से इस समाज से बेरोजगारी दूरी करने की सोची और उन्होने आह्वान किया था - ''भर्ती हो जा रे रंगरूट, यहां मिलै तनै टूटे जूते, उड़ै मिलेगें बूंट।'' समाज उनके दर्शाए मार्ग पर चलकर आगे तो बढ़ा लेकिन जो प्रगति कर गया उसने समाज से नाता तोड़ लिया। इसी लिए आज भी सब से अधिक पीड़ा इसी समाज के हिस्से आ रही है। आज समाज सर छोटू राम का स्मरण कर उस मार्ग दर्शक की तलाश में है ताकि समाज में जन चेतना आ सके। दीनबंधू का मानना था कि किसान बिना मिले रिश्ते निभाना जानता है।

सत्ता विहिन दल आज स्वामीनाथन रिपोर्ट लागू करने के लिए आधारहीन बयानबाजी करते हैं। स्मरण रहे कि इस रिपोर्ट के अनुसार किसान के उत्पाद की कम से कम किमत तय करने में लागत मुल्य के साथ-साथ पचास प्रतिशत लाभ देने की बजाहत की गई है

'ks"k i`"B&2 ij

जाट लहर पाठकों को नव वर्ष की हार्दिक बधाई, जाट सभा चंडीगढ़/पंचकूला आपके परिवार के उज्जवल भविष्य की कामना करता है कि नया साल आपके लिए मंगलमय हो।

'k"k i:t&1

लेकिन ऐसा करेगा कौन क्योंकि अभी तक एम एस पी तय करने का कोई मान्य फार्मूला नहीं है तथा गेंहू, चावल के इलावा दूसरी फसलों पर वह भी नहीं है। हां, सर छोटू राम जैसे कदावर किसान नेता की यह समाज राह देख रहा है कि वह इस रिपोर्ट को लागू करवा सके।

नई सोच नई तकनीक को अपनाकर ही समाज अपनी जरूरतें पूरी कर सकता है, इसी में सबका भला होगा। हमारी खेती और घरेलू जरूरतों के लिए बिजली पानी दोनों की व्यवस्था दीनबन्धु द्वारा योजनाबद्ध तरीके से बनाई गई भाखडा डैम से पूरी की जा रही है। वे कहते थे ''काम करो कि पहचान बन जाए - कदम चलो कि निशान बन जाए, लोग जिंदगी काट लेते हैं, ऐसे जीयो कि मिशाल बन जाए'' अतः उनका जीवन एक मिशाल बन गया। दीन बंधु कहते थे कि जो झुकता है वहीं पाता है, बाल्टी झुकती है भरकर निकलती है। बढते चलो काफिला बनता जाएगा। वे चाणक्य से मुतासिर थे कि काम की पहचान स्वतः बनती है वे किसान को एकजुट करने के लिए जीवन दर्शन दिखाते थे और कहते थे ''हिम्मतें मर्दा-मदद दे खुदा''।

किसान की विडंबना को उन्होने व्यक्त किया था कि किसान दो ढाई मण खाद्यान्न का बोझा उठा सकता है लेकिन खरीद नहीं सकता - ऐसे में एक सशक्त समाज की संरचना करना उनका ध्येय था तभी तो वे शिक्षा के पक्षधर रहे। किसान की माली हालत आरंभ से ही ऐसी रही है कि अनथक प्रयास के बावजूद वह अपनी दो जून की रोटी के लिए ही जुगाड़ करता रहा है। उसे अच्छा जीवन, कपड़े या जूते कभी म्यंसर नहीं होते। इस दर्द को बयां करते हुए उन्होने कहा था - ''जिस खेत से म्यंसर ना हो दो जून की रोटी, उस खेत के -गोसा-ए-गंदम को जला दो''। हालांकि उसकी साल भर की कमाई को जलाने की उनकी कभी मंशा ना थी बल्कि उसे फसल का उचित मूल्य दिलवाना ही था।

वास्तव में उनका जन्म 24 नवंबर 1881 का है और यह उनका 135वां जन्म दिवस है लेकिन उन्होने कहा कि मैं किसान हूं, मेरा जीना-मरना खेती के हिसाब से ही हो। कृषि जगत में हरित क्रांति का बीज अंकुरित करने के लिए लाहौर में एक दिन समारोह के दौरान उन्होने इसलिएअपना जन्मदिवस बंसत पंचमी को मनाने के लिए कहा था क्योंकि उनका मानना था कि बसंत पंचमी किसान-काश्तकार, कामगार का पर्व माना जाता है। इस दिन देश की तमाम बहादुर सामाजिक संस्थाएं किसान, काश्तकार-कामगार के हितों व कल्याण के लिए सर छोटू राम द्वारा किए गए अथक प्रयासों को स्मरण करने तथा लगातार उपेक्षित हो रहे इस वर्ग को अपने हितों के प्रति जागरूक करने के लिए उनके (सर छोटू राम) कथानुसार बंसत पंचमी उत्सव को किसान दिवस के तौर पर मनाती है। हालांकि प्रकृति कभी इतनी सरल नहीं रही है कि हर बार उसके सपनों को साकार कर दे लेकिन आशा की किरण ही उस भोले-भाले किसान का जीवन है। किसान की फसल मौसम की मार और मौसम के सहारे ही फलती-फूलती है लेकिन उसके दावेदार कई हो जाते हैं। उसके उत्पाद की कीमत वातानुकूलित कमरों में बैठकर तय होती है जो कभी भी उसकी लागत के बराबर नहीं होती।

हर वर्ष की तरह आज किसान अपना आलू सड़कों पर फैंक रहे हैं क्योंकि करीब 4 रूपये किलो लागत से पैदा होने वाले आलू की कीमत 30 पैसे किलो उसे मिल रही है जबकि आलू से बने चिप्स का 61 ग्राम का पैक्ट 20 रूपये में यानि 330 रूपये किलो का बिक रहा है। किसान से 300-350 रूपये प्रति क्विंटल खरीद उपभोक्ता को 15 रू0 किलो मिल रहा है। किसान के 90 दिनों की कमाई 30 पैसे और व्यापारी की एक दिन की कमाई 9 रूपये 70 पैसे जो किसान के साथ धोखा नहीं तो क्या है? खाद, बीज, पानी, बिजली, तेल, दवाईयों के दाम हर बार बढ़ते रहते हैं और आज अंतर्राष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत 28 से 30 डालर प्रति बैरल है जो कि भारतीय मूल्यांकन अनुसार 14.70 रूपये प्रति लीटर होना चाहिए लेकिन सरकार किसान तथा दूसरे उपभोक्ताओं को 45 रूपये डीजल तथा 60.60 रूपये के भाव से पैट्रोल बेच रही है। जबकि पड़ोसी देश पाकिस्तान, श्रीलंका तथा बंगलादेश में पैट्रोल का भाव क्रमशः 37 रुपये, 39 रुपये तथा 40 रुपये है। किसान को दी जाने वाली सब्सिडी के नाम पर भी भ्रष्टाचार का कोढ़ चिपका हुआ है। उसको मिलता है नकली बीज, खाद और दवाईयां वह भी दोगुने दाम पर। फसल ऋण के नाम पर आधुनिक साहूकार (बैंक) भी उसे लूटने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ते। ऋण देने के लिए भी उससे रिश्वत ली जाती है और कई बार तो ऋण के भुगतान का इंद्राज भी नहीं किया जाता। किस्त देने के बावजूद ऋण जस का तस खड़ा रहता है। ऐसे हालात में सर छोटूराम के फसल जलाने के फरमान को ब्रह्मअस्त्र के रूप में लेते हुए आंध्र प्रदेश के किसानों ने कृषि छुट्टी का ऐलान किया है क्योंकि आमदनी ना होने की वजह से वे खेती नहीं करना चाहते। देश के अन्य हिस्सों में भी हालात अच्छे नहीं हैं।

देश में आए दिन किसान की आत्म हत्याओं की खबर मिलती रहती हैं। आखिर ऐसा कब तक? वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार हरियाणा में 5 एकड़ से कम जोत वाले किसानों की संख्या 67 प्रतिशत थी जो अब बढ़कर 80 प्रतिशत हो गई है। आज औसतन किसान परिवार के पास एक से अढाई एकड़ भूमि ही रह गई है। एक सर्वेक्षण के अनुसार आज 90 प्रतिशत किसान ऋ ण में दबे हुए है जो कि मुख्यतः किसान क्रेडिट कार्ड के सहारे गुजारा कर रहे हैं और फसल पकने से पूर्व ही किसान से छिन जाती है। इसके साथ ही कृषि लागतों में लगातार हो रही वृद्धि, सरकार की कामगार, किसान विरोधी नीतियों व कृषि लागत से पैदावार के कम मुल्यों के कारण किसान की माली हालत दयनीय होती जा रही है। जबकि राष्ट्रीय कृषि आयोग ने भी अपनी रिपोर्ट में उल्लेख किया है कि

आज के हालात में 10 एकड़ से कम जोतों पर कृषि करना पूर्णतया घाटे का सौदा बन गया है। इसके बावजूद भी किसान की आर्थिक दशा को सुधारने के लिए कोई कारगर उपाय नहीं किए जा रहे हैं। युरोपियन युनियन अधिक पैदावार होने पर किसानों को फसल छुट्टी की सलाह देती है तथा उसकी फसल भरपाई किसान को युनियन करती है। इसीलिए वहां किसान खुशहाल है। सर छोटू राम ने किसान-मजदूर वर्ग को राहत देने के लिए कानून बनवाए थे लेकिन आज किसान पर रजिस्ट्री कानून 1882, भूमि अधिग्रहण कानून 1894 तथा भू-उपयोग वर्गीकरण कानून 1950 की भारी मार पड़ रही है। गत वर्ष पारित किया गया भूमि अधिग्रहण कानून (संशोधित) कुछ सीमा तक किसान हितैषी है जिसके तहत प्राईवेट सैक्टर के लिए भूमि अधिग्रहण करने के लिए कम से कम 80 प्रतिशत व जनहित कार्यो के लिए किसान की भूमि अधिग्रहण करने हेतू न्यूनतम 70 प्रतिशत भू-स्वामियों की स्वीकृति आवश्यक है। अधिग्रहित भूमि का मुआवजा भी बाजार दर से तीन-चार गुणा ज्यादा रखा गया है लेकिन इस कानून को लागू करने में वर्तमान सरकार असमर्थ है। शायर निदा फाजली ने कहा है :-

''पहले हर चीज थी अपनी मगर अब लगता है,अपने ही
घर में किसी दूसरे घर के हम हैं।
वक्त के साथ हैं मिट्टी का सफर सदियों तक,किसको
मालूम कहां के हैं कहां के हम हैं''।

सरकार के इशारे मात्र और थोड़े से सहारे के साथ किसान ने हरित क्रांति को फलीभूत कर दिया लेकिन उसके घर में लक्ष्मी (धन) या सरस्वती (शिक्षा) दोनों का ही अभाव है। आजादी के बाद विकास का जो माडल अपनाया गया उसकी सफ्लता और विफ्लता पर बौद्धिक बहस शुरू हो चुकी है। आज भारत की कुल आर्थिकता का 70 प्रतिशत करीब 48000 अरब रूपये की संपत्ति केवल 8200 बड़े अमीर घरानों के पास है और करीब 23 करोड़ की आबादी के पास केवल 30 प्रतिशत जो स्पष्ट करता है कि आर्थिक व्यवस्था चंद घरानों के पास गिरवी पड़ी है। एक रिपोर्ट के अनुसार एक दशक में 6 लाख करोड़ रूपये गैर कानूनी तरीके से बाहर भेजे गए और हर वर्ष 48 से 63 हजार करोड़ रूपये बाहर गए।

किसान की कठिन मेहनत से पैदा अनाज के भंडारण की भी उचित व्यवस्था आज नहीं हो पा रही है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार आज तक केवल 415 लाख टन खाद्यान्न रखने की ही व्यवस्था है। करीब 190 लाख टन अनाज मात्र पन्नियों से ढ़का है। हर वर्ष 58 हजार करोड़ रूपये का अनाज, फ्ल तथा सब्जियां बर्बाद होने की बात सरकार ने स्वंय मानी है जबकि गरीब भूख से मर रहा है और किसान विरोधी नीतियों की मार झेलते हुए नेशनल क्राईम रिकॉर्ड ब्यूरों की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2004 में 18241 किसानों ने आत्महत्या की, वर्ष 2012 में 135445 लोगों ने आत्म हत्या की जिसमें 13755 जिसमें 12 प्रतिशत किसान थे और वर्ष 2014 में 5650 किसान आत्महत्या करने पर मजबूर हुये। ये बड़े विडम्बना की बात है कि इस देश का अन्नदाता खुदकुशी करने पर मजबूर है किसानों की इस समस्या की तरफ आज तक किसी भी सरकार का घ्यान नहीं गया और ना ही किसी सरकार ने इस समस्या का निराकरण किया। सरकार भावी चुनावों के मद्देनजर लोकलुभानी नीतियां बना रही है जो किसी हालत में पूर्ण ना होने की आज से ही आशंका है। अर्थशास्त्री सरकार के दबाव में अपनी ही नीतियों में उलझे नजर आते हैं।

आज हुकमरानों द्वारा विशेष आर्थिक जोन (एस ई जैड) तथा स्टार्ट-अप के नाम पर किसान की भूमि औने-पौने भाव पर खरीद कर बड़े घरानों को सौंपी जा रही है जबकि दीन बंधु सर छोटू राम ने किसान कामगार के अस्तिव को बनाए रखने के लिए 1943-45 के दौरान सर सिकन्दर हयातखान के मंत्रीमंडल में बतौर राजस्व एवं कृषि मंत्री लाहौर में किसान कोष की स्थापना की थी और वे अपने वेतन से गरीब व जरूरतमंद बच्चों को उच्च शिक्षा के लिए वजीफा व आर्थिक सहायता प्रदान करते थे। हरियाणा में प्रो0 शेर सिंह व पूर्व केन्द्रीय मंत्री चौ0 चान्दराम ने भी सर छोटूराम द्वारा स्थापित वजिफेकोष से अपनी शिक्षा ग्रहण की थी । किसान के हित के लिए वकालत करते हुए सर छोटू राम वायसराय तक से भिड़ गए। उन्होने कहा था - ''नहीं चाहिए मुझे मखमल के मरमरे, मेरे लिए तो मिट्टी का हरम बनवा दो।'' गरीब-मजदूर-मजलूम-किसान की लड़ाई लड़ते वे भगवान को प्यारे हो गए और आज किसान रो-रो कर सर छोटू राम को पुकार रहा है - ऐ चांद(दीनबंधु) बता दे तुम बिन तारों (किसानों) का क्या होगा, तुम तो छोड़ गए हम सारों (गरीब मजदूरों) का क्या होगा?

आज दीन बंधु सर छोटू राम द्वारा किसान, मजदूर वर्ग के उत्थान के लिए किए गए कार्यों को तीव्र गति से चलाए जाने की आवश्यकता है ताकि ग्राम स्वराज का लक्ष्य पूरा हो सके। महान व्यक्ति अपने समय के युग पर्वत्तक होते हैं जो कि आगामी युगों की आधारशिला रखते हैं। दीनबंधु ऐसे ही युग पुरूष थे जिन्होने हरित क्रांति का सुत्रपात कर आधुनिक चेतना के सुत्रधार बने। अतः आज संपूर्ण किसान-मजदूर वर्ग पुकार रहा है कि कृषक-मजदूर वर्ग को सही दिशा दिखाने, शिक्षित करने, उसके उत्थान के लिए नई तजवीज व प्रगतिशील योजनाएं बनाकर उनको प्रभावी ढंग से लागू करने तथा देश में धर्म निरपेक्षता, अखंडता व प्रभुसत्ता संपन्नता को कायम रखने के लिए फिर से एक दीन बंधु सर छोटूराम की आवश्यकता है ताकि उनका ग्रामीण समाज, किसान, कृषक-मजदूर वर्ग के विकास का स्वपन्न साकार हो सके।

डा0महेन्द्र सिंह मलिक
आई0पी0एस0(सेवा निवृत)
पूर्व पुलिस महानिदेशक, हरियाणा
प्रधान, जाट सभा चंडीगढ़ / पंचकुला एवं
अखिल भारतीय शहीद सम्मान संघर्ष समिति

लोकतंत्र बनाम जाट

– सूरजभान दहिया

जहां तक मुझे समझ आता है भारत वर्ष का लोकतंत्र राज, मठ और सेठ का गठजोड है। इस तंत्र में लोक तो है ही नही। सिर्फ वोट डालने से जन लोकतंत्र का भोगी नही बनता। सत्ता पर काबिज अभिजात वर्ग वास्तव में जनसाधारण से दूरी बनाये रखना अपना राजनीतिक धर्म समझता है। भले ही वह सभी सुविधायें जनसाधारण पर लादे टैक्सों के सहारे ही ले रहा है। जब उत्तरी भारत में पोपलीला के विरूद्ध आर्य समाज विचारधारा जनआंदोलन का रूप ले रही थी तो उस समय का एक किस्सा मुझे एक बुजुर्ग ने बताया। आर्य समाज के विरूद्ध एक पंडित आग उगलता रहता था तथा जाट समुदाय सबसे ज्यादा आर्य समाज से प्रभावित था। उस पंडित की सबसे घृणित कौम जाट थी। वह पंडित बुहारी की सीक को गंगाजल में डूबो कर रोटी के टूकड़े खाता था क्योंकि वह रोटी जाट के घर से आती थी। उसके एक सहयोगी ने पंडित को कह दिया– ''यह आप क्या ढोंग कर रहे हो? आखिरकार अन्नदाता तो जाट ही है और आपको रोटी भी वही दे रहा है।'' पंडित ने फिर कहा– ''जाट को उसके हर नेक काम के लिये श्रेय देने की बजाये निरूत्साहित करते रहो नहीं तो वह फिर सामाजिक व राजनीतिक महाशक्ति बन जायेगा।'' भारत आजाद हुआ क्या आजादी के बाद भारतीय राजनीतिक दलों ने जाटों को पंडित की कूटनीति के तहत हाशिये पर रखा–यह आज के संदर्भ में एक गहरा विचार का मुद्दा है?

तो सबसे पहले जाट कौम के संदर्भ में लोकतंत्र राज का हम विश्लेषण करते हैं। मुजफरनगर जाट कॉलेज के एक समारोह के अवसर पर जिले के भले हिंदुस्तानी कलक्टर ने कहा था– ''जाटो के लिए एक अच्छे वकील अथवा सर्विस मैन होने के बजाये अच्छा काश्तकार होना अच्छा है।'' इसका मुंह तोड़ उत्तर दिया था उस समय के सभापति चौधरी छोटूराम ने। तुरंत कलक्टर साहब को फटकारते हुए उन्हें कहा– ''राज्य की नौकरी गुलामी नही, राज्य में हिस्सा लेना या हाथ बांटना है। जो लोग नौकरी नहीं करेंगे, वे राज्य में हिस्सा न पा सकेंगे। नौकरी यदि बुरी चीज है तो कलक्टर साहब को तुरंत यह छोड़ देनी चाहिये। हुकूमत करना जाटों का दैवी अधिकार है। जब उनके इस अधिकार पर आंच आये तो उन्हें उसकी रक्षा के लिए सब कुछ करने को तैयार होना होगा।'' कलक्टर साहब इस पर हाथ मलने लगे और खेद प्रकट करते हुये चौधरी साहब से उन्हें क्षमा मांगी।

एक और विवरण इसी संदर्भ में यहां देना उचित होगा। चौधरी छोटूराम पंजाब के उस समय उद्योग मंत्री थे और पंजाब असेंबली में इस विभाग के एक बिल पर वे बोल रहे थे। एक शहरी एम.एल.ए. लाला दुनी चंद ने चौधरी साहब को बहस में कटाक्ष करते हुये टोक दिया– ''जाट और उद्योग धंधे? जाटों का उद्योगधंधों से क्या संबंध हो सकता है? चौधरी साहब यह विश्वास दिलवाएं कि उद्योग धंधों का कौन प्रबंध करेगा? तब हम इस प्रस्ताव का समर्थन नहीं करेंगे।'' चौधरी साहब ने इन तीखे प्रहारों का बड़ी शांति से उत्तर दिया– लाला दुनी चंद का कहना है कि पंजाब में उद्योग धंधों की तरक्की इसलिए नहीं होगी कि यह महकमा एक जाट मिनिस्टर के पास है। मैं अपने विपक्षी मित्र को यह बता देना चाहता हूं कि जाट में स्वाभवतः शासक के गुण मौजूद रहते हैं। वह मानव समाज को समझने में समर्थ है, अपने महकमे के अधिकारियों से काम लेने का सामर्थ्य रखता है, उसकी कार्यशक्ति आप लोगों से कई गुनी है। इसलिये जब आप इस महकमे के मंत्री थे, उससे कहीं अच्छा काम मेरे अंतर्गत अब हो रहा है।

चौधरी छोटूराम ने 7 जुलाई 1938 को पंजाब कृषि उत्पादन मंडी बिल सदन में पेश किया। इस पर प्रतिक्रिया देते हुये डा. गोकल चंद नारंग ने कहा– यह मार्केटिंग बिल नही, यह तो मारकूट अथवा माईटिंग (Mighting) बिल है। जनता में इसका विरोध है। किंतु फिर भी पंजाब की जाटशाही सरकार इसे पास करने पर तुली है। इस जाट गवर्नमेंट ने कर्जा निवारक कानून बनाकर हमारे लेन–देन को समाप्त कर दिया है। बेनामी कानून बनाकर हमसे जमीनें छीन ली हैं। यह हमारे सर्वनाश पर तुली है। आगे राय बहादुर लाला मुकंदलाल पुरी ने कहा– दुर्भाग्यवश चौ. छोटूराम के प्रभाव में सारे कानून ऐसे बन गये हैं जो हमारा सर्वनाश करने वाले हैं।

भारत के लिखित इतिहास में सिर्फ उपरोक्त एक उल्लेख मिलता है जहां सरकारी दस्तावेज में चौधरी छोटूराम के काल को विरोधियों ने भी जाट गवर्नमेंट प्ररिभाषित किया है।

आज जबकि आम आदमी खासकर किसान उनके विचारों को अमलीजामा पहनाने के लिए तरसते हैं पर चौ. छोटूराम के नाम पर वोट बटोरने वाले राज नेताओं को इस बात की कोई चिंता नहीं है। सिर्फ चौ. छोटूराम ताउम्र कुचलो के देवता व शोषकों के दुश्मन बने रहे। छोटे कद के, नाम से छोटे पर बड़े नेता चौ. छोटूराम उन बेजुबानों की जुबान थे जो सेठ–साहूकारों की चक्की में लगातार पिस रहे थे। वे अपने जीवन में संघर्ष करके किसान वर्ग के उत्थान की ऐसी महान गाथा लिख गये जो रामायण की भांति पवित्र है और अमिट है। पर आज जो किसानों पर मार पड़ रही है उसे निजात कैसे मिले? नेतागण तो स्वार्थ में लिप्त हैं और अप्रभावी भी। ऐसे में सिर्फ जरूरत यही है कि हर आम आदमी, हर किसान छोटूराम बनकर इस लोकतांत्रिक राजशाही से टकराये। अपने अधिकारों के प्रति वह जागरूक हो तथा चौ. छोटूराम के जीवन से सबक लेकर अपना भला व बुरा पहचाने। देहाती बनकर नई दिल्ली में बैठे सत्ता भोगियों से अपना हक मांगने की किसान साहस करे और इससे काम न चले तो इसे छीन लेने की हिम्मत भी रखे।

मानना होगा चौ. छोटूराम जन्मे ही सिर्फ नेता होने के लिए और किसानों को नरक से निकालने के लिए। रोहतक में वे 1912 में हुक्का रखकर वकालत करने बैठ गए– दबे कुचलों के लिए। जो मुकदमें लड़े उनमें से कुछ के विरूद्ध गलत फैसले आये, उनके कारण वे आवेश में आ गये– ''न्याय नहीं अंधेर है, काले कानून हैं, मुझे बदलने होंगे। कोर्टों में तो जल्लाद बैठे हैं– एक गोरे जज जो गलत फैसले देते हैं, दूसरे काले सूदखोर जो फैसले खरीदते हैं।'' 31 साल की वह युवा दिव्य शक्ति थी, कुछ प्रगतिवादी शख्सियत चरित्र था, चट्टानों से टकराने की फिदरत थी– उसने कानून बदलने का संकल्प लिया, साथ–साथ सरकार पर काबिज होने का भी फैसला किया।

वे विद्वान थे, विचारक थे तथा वे जिस क्रांति की ओर अग्रसित हो रहे थे, उसके लिए माहौल बनाने की जरूरत थी, इसलिए उन्होंने एक कदम उठाया कि वे अपने किसान भाइयों को शोषण के विरूद्ध तैयार करेंगे। उन्होंने किसानों को शोषण से लड़ने के लिए ''जाट गजट'' साप्ताहिक पत्रिका लॉच की। उसे गांव–गांव में पहुंचाया जिसे लोग हुक्के

पर बैठकर सुनते थे। धीरे–धीरे लोगों में एक नई सोच पनपी– अपने हक की लड़ाई तो लड़नी ही होगी और चौ. छोटूराम की अगुवाई में हमें एकजुट खड़ा होना होगा। उनकी ''बेचारा जमीदार'' पुस्तक ने तो गीता की भांति प्रेरणा दी किसान एक क्रांतिकारी युग में जाने के लिए तैयार हो गया। चौ. छोटूराम ने पंजाब की राजनैतिक दिशा बदली, किसान शक्ति का अहसास अंग्रेजों तथा राजनैतिक नेताओं को होने लगा। पंजाब की राजनैतिक गतिविधियां किसान के इर्द–गिर्द घूमने लगी। 1923 में चौ. छोटूराम ने यूनियनिस्ट पार्टी का गठन करके पंजाब की सत्ता अपने हाथ में ले ली जिस पर वे परलोक सिधारने से पूर्व 9 जनवरी 1945 तक काबिज रहे।

यूनियनिस्ट पार्टी की सरकार ने चौ. छोटूराम की रहनुमाई में सिर्फ पांच साल में कोई 35–40 नये कानून बनाकर पंजाब में किसान सरकार की संरचना की। सूदखोरों ने उन्हें खूब कोसा प्रभात फेरियां निकाल कर उन्हें दिशा भ्रमित करने की साजिश रची। विधान परिषद में पंजाब सरकार के बजट को जमीदाराना बजट करार दिया और चौ. छोटूराम ने विधान परिषद हाल में ही बेहिचक स्वीकार किया– 'यश ईट ईज'। इससे चौ. छोटूराम की दूरदर्शिता के कारण पंजाब में रक्तहीन किसान क्रांति का श्रीगणेश हुआ जिसके परिणामस्वरूप विश्व में दूसरे युद्ध के दौरान चौ. छोटूराम की किसान शक्ति का अहसास हुआ।

विश्व युद्ध लड़ने के लिए इंग्लैंड के पास भारत का पंजाब एक ऐसा प्रांत था जो सैन्य शक्ति, खाद्य शक्ति और अन्य सार्मथ्य प्रदान करने का एकाधिकार रखता था। इस एकाधिकार की कूंजी चौ. छोटूराम के पास थी। जब वायसराय वेवल द्वारा गेहूं खरीद पर बुलाई गई बैठक में चौ. छोटूराम वायसराय की बात न मानकर वाकआउट किया तो लार्ड वेवल काफी परेशान हुये। उन्होंने पंजाब के गवर्नर को फोन किया कि वे चौ. छोटूराम को मंत्रीमंडल से बर्खास्त करे। इस विषय पर गवर्नर ने वायसराय को सलाह दी– ''यदि इंग्लैंड को विश्व युद्ध जीतना है तो चौ. छोटूराम को सहन करना ही पड़ेगा।''

इसके पश्चात लार्ड वेवल ने चर्चिल को चौ. छोटूराम की अपार शक्ति से अवगत कराया तथा चेताया कि चौ. छोटूराम के नेतृत्व में किसान शक्ति किसी भी विश्व शक्ति को हराने में सक्षम है। अतएव इंग्लैंड को एक योजना बनानी होगी जिससे पंजाब किसान शक्ति क्षीण हो जाये और इस प्रकार भारत के विभाजन और पंजाब किसान शक्ति को विच्छेद करने की योजना को लागू करने के दिशा निर्देश इंग्लैंड सरकार ने दिये। जिन्नाह को इसके लिए पंजाब में प्रभावी होने के लिए राजी किया गया परंतु जिन्नाह ने इंग्लैंड को बता दिया था कि जब तक चौ. छोटूराम पंजाब के सर्वे सर्वा है विभाजन योजना एक स्वप्न ही रहेगी। यह भारत के लिए एक महान ट्रैजेडी बन गई जब चौ. छोटूराम का 9 जनवरी 1945 को देहांत हो गया और इंग्लैंड का भारत का विभाजन करने का रास्ता मिल गया।

1947 में आजादी के साथ पंजाब के दो टुकड़े हुये– किसान शक्ति विभाजित हो गई और स्वतंत्र भारत में किसान समुदाय को अपना कोई प्रभावी नेतृत्व नहीं मिला। विभाजन के बाद दोनों देशों के दिलों में गहरे जख्म पैदा कर दिए। शायद विभाजन करने वालों ने इतनी बुरी स्थितियों की कल्पना ही नहीं की थी। हत्या, आगजनी और जबरन विस्थापन ने दोनों देशों के मन में अंधेरी गुफाएं पैदा कर दी और आज तक उससे वे बाहर नहीं निकल पाए। तीन पीढ़ियां गुजर जाने के बाद भी हमारे भीतर गहरा अविश्वास है और न जाने कब वह दूर होगा। पर पाकिस्तान में चौ. छोटूराम के प्रति जो आज भी श्रृद्धा बनी हुई है वह कभी विस्मृत नही हो सकती। हमने चौ. छोटूराम का अध्ययन करना बंद सो कर दिया है, पर पाकिस्तान में चौ. छोटूराम को अंतःकरण से पढ़ा जाता है और बहुत ज्यादा उनपर शोध कार्य हो रहा है। वहां पर उन पर टी.वी. चर्चाए अक्सर होती रहती हैं।

आर्थिक विकास के नाम पर चौ. छोटूराम के सामंतावादी समाज निर्माण के राष्ट्रीय लक्ष्य को हमने भूला दिया है। शायद इसलिए आर्थिक विकास के रूप में देश में संपन्नता के कुछ टापू उभर आये हैं जबकि चारों तरफ विपन्नता का किसान महासागर ही हिलोरे मारता नजर आता है। लोकतंत्र ने आम आदमी को असहाय बना दिया है। जाट की चौधर गोण हो गई है और लोकतंत्र में हम जाट हैसियत को किनारे पर पाते हैं। यह एक अति संवेदनशील मुद्दा है इस पर चौधरी छोटूराम विचार धारा के तहत चिंतन और काम करने की अति जरूरत है नहीं तो लोकतंत्र जाट कौम के लिए अर्थहीन हो जायेगा।

वैवाहिक विज्ञापन

- *SM for Jat Girl (DOB 08.11.90) 25.2/5'3" Employed as Staff Nurse in Govt. Hospital Sector 6, Panchkula. Avoid Gotras: Dahiya, Kajla, Ahlawat, Cont.: 09463881657*
- *SM for Jat Girl 29/5'2" MSc. Hons. from P.U. Chandigarh. Employed as P.O. in Nationalized bank. Trycity match preferred for family settled at Panchkula. Avoid Gotras: Sangwan, Khatri, Siwach, Cont.: 09466951525*
- *SM for Jat Girl (DOB 05.03.1989) 26.11/5'5" M.Phil. B.Ed. Father retired from Bhiwani Education Board, Mother Govt. School Lecturer, Avoid Gotras: Bhakar, Sheoran, Bhambhu, Cont.: 09416290558*
- *SM for Jat Girl 24/5'2" B. Com, MBA (Finance) One year diploma in Computer Software Avoid Gotras: Dahiya, Sehrawat, Khatri, Cont.: 09216360300*
- *SM for Jat Girl (DOB14.09.91) 24.4/5'5" M.Sc Physics from P.U. Chandigarh, Doing B.Ed. Avoid Gotras: Sehrawat, Malik, Kadian. Cont.: 09815805575*
- *SM for Jat Girl (DOB 30.08.91) 24.5/5'3" M.Sc Chemistry from M.D.U. Rohtak, Doing B.Ed from K.U. Avoid Gotras: Sehrawat, Malik, Sangwan. Cont.: 09466538100*
- *SM for Jat Girl (DOB18.10.84) 31.3/5'3" B. Com, M. Com from K.U. Kurukshetra. Computer Course in Financial Accounting, Hons. Diploma in Computer Application. Employed as Accountant in Share Market (BSE) Bombay Stock Exchange at Panchkula. Avoid Gotras: Kadian, Malik, Khatri, Cont.: 09468089442, 08427098277*
- *SM for Jat Girl (DOB 22.10. 88) 27.3/5'6" B. Sc. (Hons.) Math & Computing, M.Sc. (Hons.) -Mathematics from P. U. Chandigarh, B.Ed. with CTET, HTET cleared Working in Bhawan Vidyalaya Panchkula. Avoid Gotras: Mann, Rathee, Dhanda, Cont.: 09815253211*
- *SM for (Divorced) Jat Girl 36/5'3" B.Sc. B.Tech. Working in a private company. Avoid Gotras: Malik, Pawar, Cont.: 07508296284*
- *SM for Jat Boy (DOB 21.04.90) 25.6/5'8" B. Tech. Working as Assistant in Haryana Civil Secretariat in Excise & Taxation Deptt. Only son, Father and mother Gazetted Officers in Haryana government. Avoid Gotras: Mor, Siwach, Singroha, Cont.: 09988701460, 09855126285*
- *SM for Jat Boy 26.9/5'7" M.C.A. Employed as Project Engineer in ORACLE Co. at Banglore with Rs. 7 Lac package PA. Avoid Gotras: Grewal, Antil, Dalal, Cont.: 09417629666*
- *SM for convent educated Jat Boy 31/5'9" Post graduate from P.U. Protocol Officer in NABARD (Govt. of India Bank) Father retired Executive from PSU Bank and sister MBBS, MD doctor. Settled around Chandigarh. Avoid Gotras: Kundu, Gahlaut, Lohan, Cont.: 09888734404, 09466359345*
- *SM for Jat Boy 25.9/5'8" B. Tech, MBA Working in a MNC at Gurgaon Avoid Gotras: Rathee, Kharb, Rana, Cont.: 09416430206*

CRITICAL ANALYSIS OF FREEDOM MOVEMENT

Ram Niwas Malik

Most Indians have very foggy ideas about the Freedom Movement that lasted for 27 years from 1920 to 1947. The reasons for this ignorance are two. Firstly the history of freedom movement is taught at a tender age in the eighth class in schools. In modern schools, it is not taught even now .Secondly Indian authors do not dig in details on this subject. A simple, well researched and comprehensive biography of Mahatama Gandhi written by his grandson Rajmohan Gandhi came in the market only in 2006. Pyarelal (Personal Secretary of Gandhi Ji and brother of Dr.SushillaNayyar) had written a complete treatise on Gandhiji but his volumes are not in the public domain. Nehru's autobiography tells the story upto 1937 and that too in an anecdotal style. A complete book on Sardar Patel again by Rajmohan Gandhi came much later in 2012. A complete book on LokmanyaTillak is still not available on book-shelves.Books on SubhashChander Bose also came in 2010.This ishow we treat and respect our freedom fighters.Books by British authors throw more light on some aspects of Freedom Movement but their opinions at times are biased.

In view of these limitations, a critical analysis of Freedom Movement is called for. Firstly, the short period of 27years is a moment of pride for every Indian because we could see a galaxy of highly competent, dedicated, sacrificing and self-effacing people on the Indian horizon. Alas!We shall never be able to see such angels on the political landscape of the country any more.History is a prized possession of any country and it should not be treated as a mere baggage of the past. Gandhiji once said "A country may lose its freedom but not her history because freedom can be regained but not the history".History is a mirror of the past .It is the moral duty of every Indian to look into this mirror and draw correct inference and inspiration.As one British poet wrote "Lives of great men, all remind us:that we can make our lives sublime and leave the footprints on the sands of time."Leaders of Freedom Movement were all such great men —Tilak, Gandhiji, Patel, Subhash, Nehru, RajendraPrasad,Azad, Rajaji, Kriplani, JP, Shastri, Gokhale , Bhagat Singh –et all.All of them left their footprints on Indian history.I am afraid that the present and future generations may not decimate these foot-prints.

Looking back, Freedom Movement was conducted in somewhat adhocand unprofessional manner. It badly lacked strategy and foresight.The biggest roadblocks in the journey towards attaining freedom were 565 states ruled by delinquent and despotic rulers. They occupied half of Indian territorywithone third population.Fortunately the British Government did not suppress the movement very harshly. Hitler had told a British diplomat," Why don't you shoot Gandhi?".Stalin was allowing the massacre of millions of Russians under Bolshavik revolution. Mao's red army did the same in China.Evenrecently 4000 student were mercilessly trampled to death by the Chinese regime at Tinamen Square in 1985. Could Gandhi's Satyagrah be possible under Hitler or Stalin or Mao?

One good attribute of East India Company was that it consolidated India into a very big nation (stretching from Afghanistan to Burma) by 1856. Four other attributes of British Empire were education, railway network, irrigation network and administrative structure. Finally the education system produced leaders like Tilak, Gandhiji and others who changed the course of Indian history.After the failure of the ill organised First War of Independence in 1857, British Government became over cautious and mischievously decided not to merge 565states into the main body of India so that these could act as backwaters against the spread of fire of nationalism at any later stage. Second unwritten policy was to prevent Hindu-Muslim unity at any cost. Nobody complained to the then British Govt. that she was ruling the provinces so harshly and left the Princes and their states untouched. They were virtually given the Dominion status from the day one. Finally India got her independence along with Pakistan on 15.08.1947 after paying a heavy price of massacre of five lakh people in the communal riots and the continuing smouldering hostility between the two countries since then.Real Independence for India came after 15th August 1947 when all the states were merged in the main body of India with the scheming efforts of Sardar Patel and Lord Mountbatten and India adopting a federal structure. Jinnah had instigated many Princes to declare independence. "I want to create boils in the body of India." was his common refrain. Sir Stafford Cripps wanted to design India's political architecture as United States of India.

It is a different matter that the federal authority of India is being gradually eroded because of the weak governments at the Centre.The Chief Ministers have become regional satraps/uncrowned kings and treat the States as their personal fiefs. They just donot bother who the Prime Minister is. Now the Central Government plays a second fiddle to the States. Prime Minister is no longer the Captain of the team of Chief Ministers.Now Kejriwal dares to call the Prime Minister a psychopath and gets away:though his own persona resembles the meaning of this dirty word. A Congress Minister in Assam Governmentcalls Smritilrani as the second wife of the Prime Minister and gets away. Earlier Karunanidhi and Mamta Banerjee made the Central Government dance to their tunes. Opposition parties are bent upon washing out the Parliament Sessions and still the Speaker of LokSabhacalls for a new Parliament building. Legislators of warring groups behave like real brothers only when their salaries have to be increased. Finally the Parliament and State Assemblies have become House of Horrors or indoor stadiums for playing mudslinging matches. To borrow Churchill's phrase, India is now being ruled by men of straw. One does not know what is in store for Indian Democracy in future?. The intellectuals will have to think over this grim issue and find out the answer.

Four leaders were finally at the vanguard of Freedom Movement – Gandhiji, SardarPatel, JawaharLal Nehru and SubhashChander Bose. Six great leaders .i.e. Tilak,Gokhale,Motilal, CR Dass ,LalaLajpatRai and MukhtiarAhmed Ansari had died in 1920,1915,1931, 1925, 1928 , 1936 respectively. The movement badly lacked proper strategisationand every leader made some mistakes. Problem with Gandhiji was that he always kept his cards close to his chest. Nehru once complained about this attitude but got no satisfactory answer. Gandhiji spent lot of time in writing articles and replying letters. Patel once taunted him in YervadaJail "Readers and writers have never become immortal. Only people at the forefront of war have." Gandhiji never framed a road map for a time bound program to attain Swaraj or independence. There was no planning even for next two years.There was never a brain storming session on deciding the future course of action.

Gandhiji always planned his future steps mostlyby instincts and his lieutenants always believed in his instinctive powers. There was total adhocism in his approach.He went to attend the 2ndRound Table Conference in 1931 without doing any homework and holding discussionswith his colleague's .He madean insipid extempore speechand British authorities were greatly disappointed with his performance. He was never a man in hurry.But his fight against untouchability was monumental. His seven day fast in Jail in 1932 undid the Communal Award, which had provided separate electoral arrangement for Harijans. He gave greater preference to this fight than achieving freedom. Nehru again objected to this attitude but was ignored as usual. Churchill told GD Birla in 1935 that he had been greatly impressed with Gandhi atleast for his fight against untouchability. His contribution to douse the communal fire in Bihar and Bengal in1946 was equally monumental. Issue of exploitation of India and continuation of abject poverty was never raised along with the demand forSwaraj.

His other mistake was his inability to take Ali brothers and Jinnah with him at the 1928 Congress session. Jinnah was even prepared to forgo the principle of separate electorates provided one third seats were allotted to Muslims in Central Legislative Assembly. Congress was adamant on 25%.Some hard negotiations could have clinched the issue and India would have remained undivided.Hindu Mahasabha sabotaged this plan. Agolden opportunity was lost for establishing permanent Hindu-Muslim unity.His other fatal mistake was ignoring Patel and asking CWC(Congress Working Committee) to make Nehru as the Congress President in April 1946.He also compelled Patel to release Rs.55 crore to Pakistan as part of agreement. His earlier mistake was

not to work hand-in-hand with Tilak. CWC did not demand the arrest of Jinnah when he observed the Direct Action Day on 16th August, 1946 and five thousand Hindus were killed and 15 thousand injured in Bengal. Gandhiji mostly lost the battle across the negotiating table .He would easily condescend and concede more than take as a result of the oily tongue of the person in front.

SubhashChander Bose on the other hand, was always a man in hurry. His first mistake was not to work under the guidance of Patel after the death of CR Das in 1925 and the two would have formed a very formidable combination. He always ploughed a lonely furrow. His highly risky journey to Germany proved fruitless. It would have been better had he gone to Japan. His attack on Imphal and Kohima along with Japanese army was one year late.Nehru's mistakes were unending. Kashmir issue was his creation. Even after independence his costliest mistake was to make Krishna Menon as the Defence Minister and a defecto Foreign Minister. China attacked India because Nehru made an impromptu statement at Madras Airport "I have asked the military officers to throwthe Chineseout."Harold Macmillan (Ex PM England) commented on Nehru in 1946 as,"Nehru is nervy.SeeingPatel,I am reminded of Earnest Bevan."Bevan was the foreign minister of England under Attlee. He was a very tough negotiator.

Sardar Patel rarely committed any mistake. He was a man of great foresight, sagacity and pragmatism .His one mistake was that he did not envisage the fate of Hindus in Pakistan at the time of division (The day of independence i.e. 15th August, 1947 should have been fixed after the issue of transmigration of Hindus and Muslims was solved.Postponement of this day by 6 months or so would have solved this issue. Nehru hadrightly thought thatJinnah would not survived long and Muslim league would lose its identity thereafter. But nobody could predict that Jinnah would dieactually on 11/09/1948 due to cancer.Attlee had fixed the day of departure as 30th June, 1948). His other mistake was not to oppose the decision of the Cabinet vehemently to take the Kashmere issue to UNO. The combined mistake of CWC was to leave Khan Abdul Guffar Khan (Frontier Gandhi) and his brother Dr.Khan Chandin lurch and at the mercy of Muslim league. Their last days were most painful in Pakistani jails.The Congress never thought of establishing a rapport with Labour Party in England and President Roosevelt in US. CWC never formulated any strategy to control and outfox Jinnah and Congress remained always at the receiving end.Jinnah did not go to jail even for a day.Gandhiji, Patel, Nehru and Subhash remained in jail for 8 to 9 years each. Incarceration of Subhash was the harshest.

Gandhiji made another fatal mistake when he called Jinnah the Quaid-e-Azam and went seven times to meet him at his residence in September 1944. These meetings gave Jinnah a big national status and halo. Infact, he should have contacted Khijar-Hayat –Khan and ChaudharyChhotuRam to pin down Jinnah.Patel had formed a strategy to do this job butMaulana Azad did not cooperate.

But for all these indeliberatemistakes,Gandhijidisplayed the genes of Mahatma Budh, Socrates and Yudhister in full throughout his fight against the Raj. Three cardinal principles of his mode of working were truth, non-violence and unflinching faith in God. He stuckto these principles like an Angle on earth.His writings were always transparent, direct and free from semantic jugglery and became quotable quotes. He built a strong web of Freedom Movement in very adverse circumstances. All the leaders had made supreme sacrifices. Subhash left his ICS. C.R. Das,MotiLal Nehru, Patel, Prasadleft their roaring practices. JP threw his books in a reservoir .When Gandhiji came to India from South Africa on 9thJanuary 1915, the political landscape was almost barren. Tilak was a limping lion after his incarceration in jail for six long years.Poverty in villages gave an unbearable sight.Congress party was still a club of urbanites. Gandhi ji made it pan- Indian

There was a strong wall of mistrust between Muslims and Hindus on one hand and Hindus and Dalits on the other.Dalit leaders openly said in Bombay that British Raj was better than the Hindu Raj in independent India. Ambedkar opposed Gandhiji tooth and nail at the 2nd Round Table Conference. Princes were least interested in Freedom Movement.. Hindu-Mahasabha and Unionist party leaders in Punjab did not participate in freedom struggle at all.They were happy with the existing arrangements of governance. ChaudharyChhotu Ram should have resigned from the Unionist party when Sir Sikander Hayat Khan joined hands with Jinnah at the Muslim League Conference in Lahore in 1940 and drafted the infamous Lahore Resolution in 1940. Only Congress was fighting against the Raj though not in a professional manner. A Pakistani journalist recently remarked "Your leaders went to jail and you are reaping the fruits of democracy. Our leaders did not go to jail even for a day and democracy is still very much elusive in Pakistan". Many Prime Ministers of Pakistan met a bloody end and Benazir Bhutto was the last in 2007.Suharwardy, Feroz KhanNoon , Z. A. Bhutto and Zia-ul-Haque were the others

The spark of freedom movement was ignited by LokmanyaBalGangadharTilakwhen he declared "Swaraj is my birth right and I shall have it". This single punch line electrified the students and educated community in whole of India He formed a formidable block with Jinnah and Annie Besant to start the campaign of Home Rule. But he could not carry forward his campaign as he was imprisoned for 6 years in solitary confinement in Mandley Jail in 1908.There were riots in Bombay on that day and sixteen people were killed in firing. The crowd at his funeral on 01/08/1920 in Bombay was unprecedented. Such was the Tilak effect on the people of India. He became diabetic and was a pale shadow of himself when he was released in 1914 from the jail. Now he was more mature and had softened his militant stance.Still he captured Congress and achieved Hindu-Muslim unity in 1916 under the Lucknow Pact at the Congress session in Lucknow.

Now he started following Gokhale and suggested a visit of an all-party delegation to London and ask the British Government to give a time bound program for granting Swarajon the pattern of Canada, Australia and New Zealand in exchange of full political cooperation till then. Swaraj was an ante-chamber to independence. But he was not taken seriously by diverse political groups including Congress. This was probably because three misdeeds of the Raj i.e. Jalianwala massacre, Rowallat Act and Khilafat issue were unforgivable actsand Govt. was not unrelenting on any of the three issues. The trust between the Govt. as abenevolentdictator and the people of India was lost for some years. However, this idea should have been tried later in 1928 when unnecessary ultimatum of granting freedom within one year was given to Lord Irvin. The only mistake of great Tilak was that he unnecessarily wrote articles in Kesariwhich bordered all sedition and had to spend 7 years in jail together with long litigations. The loss to the cause of Home Rule for being in jail was much more than the benefit of those writings.

Mahatma Gandhi had become a celebrity after his sustained Satyagraha for two decades for restoration of basic human rights to Indians in South Africa. On his arrival, he was invested with the award of Kesar-e-Hind by none other than Willingdon the Governor of Bombay (Willingdon treated Gandhijivery shabbily when he replaced Lord Irvin as new Viceroy in India in 1931).Gandhiji declared that GopalKrishanGokhalewould be his political guru. Gokhale advised him to roam in India for one year as a probationer to acquaint himself with ground realities before attempting his Brahamastra .i.e.Satyagraha to attain Swaraj. Unfortunately Gokhale died one month after in Feb 1915 at a young age of 49. He was a very brilliant man and had been championing the concept of constructive cooperation with British Government to attain Swaraj over a period of time and keep India united. He was the ablest parliamentarian of the day and his speeches in Central Legislative Assembly were a pure poetry. Lord Curzon paid very rich tributes on his death.Malviya, Motilal, Bipin Chandra Pal, CR Das and Surrender Nath Banerjee were also very fiery orators. Oratory of Gandhiji was of low key but his words always touched the hearts of the audients.

Success of Champaran Satyagraha further made Gandhiji the household name in India and young zealots like Kriplani ,Rajendra Prasad , Jawaharlal and Patel became his life long adherents. Patel was only 6 years junior to Gandhiji .Motilal and CR Das also joined his band wagon. CR Das had a practice of Rs 50,000 per month in those days. Gandhiji made the first fatal mistake of not joining hands with Tilak. Probably he thought that Tilak did not believe in non – violence. That was not true.

Gandhji challenged the Empire on 1st August 1920- the day Tilakdied, on the issue of JallianwalaBaghmassacre, Khilafat episode

and Rowallat Act. It was named as Civil Disobedience Movement .The fourth phase of the Movement called for an open rebellion against the Raj.The whole country rose as one man and lakhs of people went to jails.Lord Reading remarked "For the first time , the bridge of Hindu-Muslim unity is being erected on a strong foundation. "Thenhappened the unfortunate incident atChauri-Chaura(near Gorokhpur)on 5th Feb 1922 where villagers burnt alive 24 constables inside the police station. Gandhiji could not bear this scale of violence and withdrew the movement unilaterally without consulting his colleagues who were all in the jail. This was his second fatal mistake.Continuation of this movement at this high pitch would have brought the Govt to its knees.But the invisible effect of this movement was that it shook the foundations of the Raj and British Govt. realized that she will have to leave India within decades. Earlier the Philosophy was to rule India for 1000 years.

The government deliberately did not arrest Gandhiji with the hope that he would keep the movement non-violent and he freely roamed and visited all parts of India to exhort people to join Sataygraha. All the leaders were aghast at the sudden withdrawal of the movement which was going in its peak form. Ali brothers (Mohammad and Shaukat) felt greatly let down and the thread of trust was broken for good. Only Jinnah and ChaudharyChhotu Ram had not joined this movement amongst senior politicians.

Now the government felt relieved and arrested Gandhiji for causing violence. The judge sentenced him for a period of six years.But he was released after two years of stay in the jail. There was quiescent period till 1928 except the unwise boycott of the visit of Duke of Cannaught.Boycott of Simon Commission was another unwise step which led to the death of LalaLajpatRai and that of Bhagat Singh and his associates as a consequence.

Freedom movement was renewed again in 1928 session of Congress at Calcutta. Motilal Nehru report for Dominion status was presented .It was opposed by JawaharLal and Subhash Bose who wanted complete independence. Gandhiji brokered the peace by advising them to give one year time to British government to grant complete independence as if British government was ready for it. When nothing came out, JawaharLalpresided over the Lahore session in December 1929 and declared that complete independence was the aim of Congress and unfurled the national tri-colour as a symbol of attaining independence.But nobody knew how to achieve this objective. Muslims had already turned their back both towards Congress and Freedom Movement. Same was the case with the Dalits.

Instead of launching the independence movement as promised at Lahore session, Gandhiji launched Salt Satyagraha in March 1930.The movement was a roaring success. Reverberations reached USA and Americans started taking interest in Indian affairs thereafter.Status of Gandhiji as Messiah of the poor went sky high. Now he became an international celebrity.Even Charlie Chaplin , the famous American actor of the day, came to meet him in England in 1931. The British Government realised the gravity of this situation and decided to enact a very comprehensive Bill to grant some sort of Dominion status. The Bill became an Act in 1935.Churchill and some of his colleagues opposed this Bill tooth and nail at every stage by delivering blistering speeches. But Lord Irwin and Stanley Baldwin (the British PM) were determined to carry it through and they did.ThisAct granted 80%Dominion status to India in one stroke.The Congress again unwisely did not appreciate the efforts of Baldwin and Irwin nor builta rapport with Attlee and other leaders of Labour party. The rapport at this stage could have made this act more pro-independence.The party as in 1919 adopted an ambiguous position.

The new Act of 1935 allowed Indian political parties to rule the provinces.Indians would now be able to become the Premiers – no more diarchy.Gandhiji negotiated with the Viceroy that Governors would act only as provincial heads. At the Central level a federal government was proposed .But the Princes sabotaged this proposal. Congress also did not evince any interest in the formation of Central Government and allowed the Viceroy to rule the country as before.Elections were held for State Assemblies in Feb 1937. Congress party won with a thumping majority in 8 provinces and formed governments.Unionist party won the elections in Punjab.GB Pant became the Premier of UP andRajaji that of Madras. Sir Sikander Hayat Khan became the Premier of Punjab.Muslim league got a severe drubbing even in Muslim constituencies These governments provided ideal governance for two years(RamRajaya).Then came the earthquake in the form of 2ndWorld War. Germany attacked Poland on 1st September 1939.England declared war against Germany the next day. India too was declared as a warring nation against Germany.This unilateral decision of Viceroy shocked and chagrined the Congress Party

The Viceroy, Lord Linlithgo, called Gandhiji at Shimla and begged for his support during the war as he had done during the 1st World War.Gandhiji told that every decision was in the hands of Congress party and he could notcommit anything at his own.CWC asked two concessions from the Viceroy: commitment of complete independence after the war and an interim Indian Government during the conduct of the war.The Viceroy called the two demands as pure blackmail and gave a very weak assurance that something would be done after the war.CWC told the Viceroy that it was a reasonable bargain and not blackmail. Viceroy now called Jinnah. Jinnah asked for a simple commitment, "Only I shall be called to represent Muslims of India in future parleys".Viceroy agreed and decided to operate Divide and Rule policy in future.He then offered him even the creation of a separate state. British government both at Delhi and London followed this policy adherently and passionately for the next 8 years.

CWC foolishly asked all its Premiers to resign and they did so by 27.10.1939.This is what the Viceroy wanted. Jinnah celebrated this occasion as the Day of Deliverance from Hindu Raj. In fact CWC should have sent its emissaries to Roosevelt and Attleeto clarify its stand before taking this fateful decision. CWC thought that loss of face before the people was costlier than loss of power.Any way it was an act of supreme sacrifice.Churchill was still not the PM of England and a bargain could have been brokered with soft Chamber lane. Churchill became PM only in May 1940.Now the crest fallen CWC beseechedBapu to guide the party out of this confusion. GandhiJi had no readymade solution and he simply advised to launch a lowkey civil disobedience movement. It was launched in Oct., 1940 under VinobaBhave. All the leaders were again put behind bars and were released after one year. Meanwhile SubhashChander Bose reached Germany and started addressing Indians on Azad Hind Radio.He had opined that his exhortations would make Indians in police and military revolt but nothing happened of this kind. But silently a mindset of revolt was being built up in their minds which became visible in 1946.Gandhiji started praising Subhash.

Japan attacked Pearl Harbour on 7th December 1941 and the war became global. She captured all South Asian countries by March 1942. The Japanese army reached Indian borders after capturing Burma.Japan did notwish to attack India for two reasons. Firstly the army wanted to take some rest for logistic reasons. Secondly there was no oil or gas in India which Japanese government wanted desperately .But at that time it was very easy to capture Madras, Calcutta and all the North-East states because British Indian army was not well equipped to face the Japanese onslaughts.Japan thus lost a golden opportunity to give another crushing and humiliating defeat to British Indian Government after Singapore. Churchill got heart attack when he was informed about the total surrender of British Indian army in Singapore and sinking of two main battle ships.

Japanese converted all the 70000 captured Indian soldiers at Singapore into an Indian National army.Subhash was called from Germany to take over the command.He came in April 1943 and took over the reins of INA. Now the good news for England was a humiliating defeat for Germany both in Africa and Russia and Churchill now sent additional forces to India to recapture Burma, Malaya and Singapore and command was given to Mountbatten. Japanese and INA attacked India at Kohima in March 1945.The attackwas late by one year.Therewas fierce fighting for three months. Advice of Subhashnot toencircle British Indian armyat Imphalwas ignored. Japanese army started retreating because of early rains in the hills and necessary reinforcements from behind were not available. This was a grim situation for India because Indian soldiers were fighting against Indian soldiers for the first time. People of Bengal did not come forward to cheer Subhash probably because their back was broken by the 1943 famine, when 30 Lakh

people lost their liveslargely because Churchil did not send the necessary shipments

When Americans declared war in 1942, they realised that unflinching support of Indian masses was a must to defeat Japan and capture the only link road going to China through Burma. So US President Roosevelt pressurised Churchill to start a dialogue with Indian leaders to grant full Dominion status. Accordingly Sir Stafford Cripps came to India on 22nd March 1942 with a very vague and complicated proposal. He was a great friend of Nehru and ignored Gandhiji. Gandhiji understood that this proposal would balkanize India and bluntly told him "If these are your proposals, then better catch the earliest available return flight.". Cripps mission failed and he returned to England on 12th April empty handed. This is what Churchill wanted.

Gandhiji got a wonderful opportunity to hit back theBritish Government when Japanese army came close to Indian borders in March 1942.There was a wave of panic about the possible Japanese attack on India. Nehru foolishly andfuriously started criticizing Japan and went to the extent of saying, "I will even fightSubhash if he comes along with Japanese."Subhash should have been in India or in Japan in 1942 as only he could have brokered with Japan to flush out Britishers from India without capturing her territory as was agreed later. On the other hand Gandhiji declared "Japan will attack India simply because England is ruling the country.She will never attack India if Britishers leave India and go back to their homeland". He therefore gave a clarion call for"Quit India Movement" on 8th August 1942 at a big rally at Maidan in Bombay.Their he spoke like Subhash and gave the slogan of "Do or Die".The government lost no time in arresting all the CWC leaders andGandhiji at 4am on 9th August.There was a strong wave of indignation in the country and people came on the streets in the morning. They started burning government property and damaged telephone lines.The Government took three months to control this upheaval.Gandhiji was released in June1944. The Viceroy Lord Linlithgo was replaced by Lord Wavell in 1943.

With great persuasion, Wavell got the permission from Churchill to release Indian leaders from the jail and start a dialogue with them.(Churchil was dead set against grating any political concession to India. Later he wanted to divide the country into Hindustan, Pakistan and Princistan). All the Congress leaders were released in May 1945 after a period of 33 months detention in Ahmadgarh fort. They got a hero's welcome on their release and now they all felt that Quit India Movement of Gandhiji was the right decision. Wavell called a meeting of Congress and Muslim League leaders at Shimla to work out the future course of action and constitute the interim Government. But Jinnah sabotaged that meeting at the instance of a secret message from Churchill. Wavell asked Nehru to form the interim government which he did. Later Wavell requested Nehru to let Muslim League also join the government.Nehru unwisely agreed. Finance Ministry was given to League on the foolish advice of Rafi Ahmad Kidwai. Liaquat Ali became the Finance Minister and he created lot of problems for Nehru and Patel.Sardar Patel now realised that cooperation with Muslim League was impossible and division of the country was the only answer. Meanwhile England won the war in May 1945 and elections were held soon after. Labour party came to power against all expectations and Attlee became the Prime Minister in July, 1945.

British Government was now faced with severe financial crunch. There were queues at the food stores and the food items were rationed.Nobel Laureate Sir John Maynard Keyens was made the Finance Minister. He warned the government saying "Now England is going to face financial Dunkirk ".British government was under an Indian debt of one billion pounds.It is not known if it was repaid. The worst part was that the salary of Indian soldiers was paid from Indian exchequer.Therefore, Attlee was not interested in ruling India any more. The Congress party also had not planned any solution.CrippsMission or Cabinet Mission came to India on 22ndMarch1946. It consisted of Sir Stafford Cripps, Lord PathicLawrence and Lord Alexander to firm up a proposal forsmooth transfer of power. This time Cripps did not ignore Gandhi JI . But the Cabinet Mission again failed as Cripps was still toying with his old proposal. Attlee declared on 20th Feb 1947 that Britishers would leave India by 30th June 1948 and hand over power to any group if political parties failed to hammer out any solution. Wavell was replaced by Mountbatten in March 1947. Somebody advised him to take Sardar Patel in confidence as only he talked pragmatism.Mountbatten told Patel "A strong India with monolithic structure is better than loose and undivided India".Finally Mountbatten prepared his own plan of division of India which was finally accepted both by Congress and Muslim League. Pakistan was carved out somewhere upto Amritsar and Ferozpur and under the circumstances,Jinnah had to contend with moth eaten Pakistan.

Mamdot Ministry was dismissed on 5th March 1947 and it was followed by the Governer's rule. The goons of Muslim League started killing Hindus to compel them to leave Pakistan and go to India. Hindus also started expelling Muslims from Punjab.This led to the breakout of communal riots. 5 lakh people lost their lives and 10 lakh were wounded.This was a big price to pay for the division of India and attainment of Independence.

Now the big issue was to deal with 565 princely states.Sardar Patel had advised CWC to allow Mountbatten to continue as Viceroy of India after 15th August 1947.Mountbatten repaid this gratitude by telling the Princes that British Government's responsibility of giving protective umbrella to them ended in 15th August 1947.In other words they will have to join either India or Pakistan depending upon their geographical position. This statement shocked the Princess so much that their glasses fell down from their trembling hands.Sardar Patel asked them to sign an instrument of accession to India in exchange of privy purses (Mrs Indira Gandhi abolished these privileges in 1972).Maharaja of Patiala was the first ruler to sign the document.Jinnah had thrown him a bait to declare independence and Pakistan would recognise the government. But he ignored the call.Sardar Patel followed a carrot and dagger policy in dealing with the Princes. As a result, all the Princes fell in line one after the other and signed the document. Only Nizam of Hyderabad adopted a defiant attitude and the great Sardar Patel ordered Police action to take over this big territory in December 1947.

India became an independent country on the midnight of 14th August when Jawaharlal Nehru delivered his famous speech "India's tryst with destiny." He unfurled the national flag on Red Fort on 15th August in Delhi. It was a red letter day in the fourteen hundred years long sterile history of India. Gandhi ji was busy in dousing the communal fire in Bengal. On that day he was staying in a dingy street of Calcutta and was able to bring a congregation of five lakh Hindus and Muslim to celebrate Id in Calcutta on 18th August 1947. Punjab continued to burn because there was no Mahatma Gandhi to do the similar job.Mountbatten paid a great tribute to the efforts of Gandhi ji with the remark "What Gandhi Ji and his lieutenant Suharwardy achieved in Bengal, our force of 55000 soldiers could not achieve in Pakistaan."Jinnah became the President of Pakistan after refusing Mountbatten to be the Viceroy for some time as promised earlier. Mountbatten felt slighted. But after few months, Jinnah found that Pakistan was facing insurmountable economic problems. Then he said "I made the biggest mistake of my life in carving out Pakistan."

Gandhiji fell down to the bullets of an assassin on 30th January 1948.He met his death from the bullet of the man of his own country like AbrahimLincon in USA. Now India was faced with heavy exodus of refugees from Punjab. Hard work by Nehru and Sardar Patel took two years to settle this issue. The Constituent Assembly framed the Constitution and the final draft was approved on 26th November, 1949. It was adopted on 26th January 1950. Sardar Patel died on 29th December, 1950.Gandhiji had said that Patel and Nehru were the two bullocks under the same yoke and one could not pull the cart out without the help of the other. Now one bullock was dead and the second bullock did not form any pair and could not take out the cart effectively and he too died on 27th May 1964. In the final analysis, a freedom movement of the 27 years was saga of supreme sacrifices by our angelic leaders and many more unsung heroes like Mahadev Desai who died on 15th August 1942. The rest as they say is the history of Modern India.

Now will the present generation and new selfish and confiscatory political class will reliase the value of the Supreme sacrifices made by our leaders during the freedom struggle and preserve the unity of the country , eradicate poverty and remove the tag of an underdeveloped country from the face of India? Let's hope for the Best.

जाट समाज के विकास हेतु चिंतन-मंथन

jkd:'k ljkgk

(जाट ज्योति के अंक में चौ. रतीराम पूनिया, सेवानिवृत संयुक्त निदेशक, कृषि विभाग हरियाणा से जो अपनी बेबाक टिप्पणियों के लिए सिरसा में जाने जाते हैं, की जाट ज्योति पत्रिका के सिरसा प्रतिनिधि श्री राकेश सरोहा ने कुछ दिनों पहले हुई मुलाकात जिसमें जाट समाज की वर्तमान समस्याएं, उनके समाधान और पूनिया जी की प्रतिक्रिया आदि की जानकारी जानी। पाठकों की जानकारी हेतु चौ. रतीराम पूनिया से की गई मुलाकात के अंश प्रकाशित किए जा रहे हैं।)

राकेश सरोहा : कृपया आप जाट ज्योति पत्रिका के पाठकों को अपने बारे में संक्षिप्त में बताएं।

रतीराम पूनिया : मैं उप–कृषि निदेशक हरियाणा सरकार से सेवानिवृत हूं। मेरा मूल निवास पंजकोसी जिला फाजिल्का (पंजाब) है। मेरे पिता जी का नाम चौ. काशीराम पूनिया (नंबरदार) है। वह एक साधारण किसान थे। मैंने M.Sc. (Agri Agronomy) वर्ष 1976 में पास की और वर्ष 1976 में दिसंबर माह में हरियाणा कृषि विभाग में कृषि विकास अधिकारी के रूप में मेरी नियुक्ति हुई। प्रथम नियुक्ति जिला भिवानी में हुई, फिर सिरसा में। इसके बाद क्रमशः रेवाड़ी, दादरी, बतौर द्वितीय श्रेणी अधिकारी व वर्ष 2000 में बतौर उपकृषि निदेशक सिरसा, पानीपत, फतेहबाद, पंचकुला, गुड़गांव में अपनी सेवाएं दी। सिरसा उपकृषि निदेशक के समय मुझे सरकार द्वारा संयुक्त कृषि निदेशक (कपास) के पद का अतिरिक्त भार भी सौंपा गया। तब मेरं अधीन सिरसा, फतेहबाद, हिसार, भिवानी, नारनौल, जींद, कैथल, सोनीपत जिले थे। इनमें कपास की खेती के बारे में किसानों को जानकारी देना तथा कपास के क्षेत्र में बढ़ोतरी करना मेरा मुख्य उद्देश्य था। मेरी सर्विस का अधिकतर समय लगभग 24 वर्ष सिरसा जिले में ही गुजरा था। इतने लंबे समय में मेरे सिरसा जिला के किसानों के साथ परिवारिक रिश्ते बन गये। किसानों को कपास, गेंहू, गन्ना, धान की फसलों के लिए उच्च क्वालटी के बीज, खाद, कीटनाशक उपलब्ध कराना मेरा मुख्य उद्देश्य रहा तथा समय–समय पर गांवों में किसानों के कैंप लगाकर बिजाई के समय बीज उपचार करना, उत्तम बीज खरीदने के बारे में, आवश्यकता अनुसार किस कीट के लिए कौन सी कीटनाशक दवा स्प्रे तथा प्रति पौधा कितने कीड़े हो तो कितनी स्प्रे की जाये आदि के बारे जानकारी देना मेरा मुख्य कार्य था। इससे किसानों को बहुत लाभ मिला। इसी कारण आज भी मैं किसानों के साथ जुड़ा हुआ हूं। आज भी किसान मुझसे कृषि संबंधी जानकारी प्राप्त करते हैं। किसानों से मेरे पारिवारिक रिश्ते बनने के स्नेह ने मुझे सिरसा में ही रहने को मजबूर कर दिया तथा सेवानिवृत्ती के पश्चात में अब राम कालोनी सिरसा में अपना मकान बना कर परिवार सहित निवास कर रहा हूं। मुझे सेवानिवृति के पश्चात समाज सेवा करना, किसानों को फसल संबंधी जानकारी उनके खेत में जाकर बताने में बहुत आनंद प्राप्त होता है।

राकेश सरोहा : जाट आरक्षण जाट समाज के विकास के लिए कितना आवश्यक है तथा इसके लिए जाटों को क्या कदम उठाने चाहिये।

रतीराम पूनिया : आज के समय में जाटों के लिए आरक्षण बहुत आवश्यक हो गया है। यदि जाटों का विकास सरकार या जाट संगठन चाहते हैं तो सरकार द्वारा जाटों को भी अन्य जातियों की तरह से सुविधाएं देनी चाहिये। आरक्षण के साथ–साथ अन्य सुविधाएं जैसे पढ़ने वाले बच्चों को छात्रवृति इत्यादि दी जाये। बढ़ती जनसंख्या के कारण आज 40 प्रतिशत जाटों के पास कृषि के लिए 2–3 एकड़ भूमि ही है। 30 प्रतिशत जाट ऐसे हैं जिनके पास एक एकड़ या आधा एकड़ ही है। 20 प्रतिशत जाट ऐसे हैं जिनके पास भूमि है ही नहीं। आज जाटों की हालात बहुत खराब है। इसलिए जाटों के उत्थान के लिए आरक्षण अहम है। आरक्षण लेने के लिए जाट वर्ग को संगठित होना चाहिए। बिना संगठन के आज तक किसी को कुछ नहीं मिला है और इस सरकार से जाटों को किसी बात की उम्मीद भी नहीं रखनी चाहिए। जाट संगठित हों और पूरे जोश व हिम्मत के साथ सरकार से टक्कर लें। तब कुछ पाने की उम्मीद बनेगी।

राकेश सरोहा : कुरूक्षेत्र संसदीय सीट से सांसद श्री राजकुमार सैनी के जाट आरक्षण पर दिये जा रहे बयानों पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है।

रतीराम पूनिया : कुरूक्षेत्र के सांसद राज कुमार सैनी जाटों के प्रति आरक्षण के लिए जो भी बयान देते हैं वे अति निंदनीय हैं। इस सांसद का जाटों को एक जुट होकर बहिष्कार करना चाहिए। यह जिस हल्के में जाये वहां के जाट उनका विरोध करैं मेरे विचार में सांसद राज कुमार सैनी जाटों के लिए विशेषकर आरक्षण बाबत जो बयानबाजी करते हैं, यह पी.एम. मोदी व बी.जे.पी. पार्टी की सोची समझी चाल लगती है। वे पिछड़े वर्ग व जाटों को आपस में लड़वाना चाहते हैं। पी.एम. मोदी जाटों को यह कहना चाहते हैं कि हम आरक्षण देना चाहते थे परंतु अन्य जातियों के विरोध के कारण नहीं दे पा रहे हैं। यदि पी.एम. मोदी की नीयत में खोट न हो तो सांसद राज कुमार सैनी की क्या हिम्मत कि वह ऐसे ब्यान देता रहे। सी.एम. मनोहर लाल खट्टर ने गौ मांस पर एक ब्यान दिया था। दूसरे ही दिन अमित शाह ने उसे दिल्ली बुलाकर झाड़ पिलाई। गौ मांस पर ब्यान हेतू पी.एम. तथा अमित शाह ने अपने नेतागणों को हिदायत दे दी कि कोई भी इस पर ब्यान नहीं देगा तो फिर राज कुमार सैनी को क्यों नहीं झाड़ लगाई जाती? पार्टी व पी.एम. मोदी कुछ कहे या ना कहे परंतु जाटों को ऐसे सांसद के बयानों का विरोध करना चाहिए ताकि अन्य सांसद भी भविष्य में इस प्रकार जाति विशेष को टारगेट न बनाएं।

राकेश सरोहा : पूर्व कमांडेट हवा सिंह सांगवान द्वारा हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर को पाकिस्तानी कहने वाले बयान को आप किस नजरिये से देखते हैं।

रतीराम पूनिया : पूर्व कमांडेंट हवा सिंह सांगवान ने सी.एम. हरियाणा को पाकिस्तानी मूल का कह कर मेरे विचार में कोई गलती नहीं की है। (यह तो वह बात हो गई काणों को काणा कहना गलत है) कोई भी व्यक्ति या समाज की जिस भी स्थान में निकासी होती है तो आम भाषाओं में उसे भी यही कहते हैं कि यह तो फला जगह से है। पाकिस्तान से पंजाबी ही नहीं अन्य कौम– जाट, सरदार, कंबोज व अन्य कई बिरादरी विभाजन के समय आये थे। अन्य किसी भी जाति ने कभी एतराज (विरोध) नहीं जताया। पंजाबी लोगों के साथ मेरा काफी उठना बैठना रहा है। पारिवारिक संबंध भी हैं। जब बैठते हैं तो पाकिस्तान की बातें अवश्य करते हैं। जबकि पाकिस्तान से आये उन्हें 68 वर्ष बीत गये हैं। तीसरी–चौथी पीढ़ी आ गई है। वे अपनी बोली में अभी भी आपस में बातें करते हैं जो हमारी समझ में नहीं आती है। वे आपस में कहते रहते हैं कि ये मुल्तानी है, झांगी है, अरोड़ा है। आज भी उनको पाकिस्तान का भूत सिर पर चढ़ा हुआ है। अपने प्रतिष्ठान, दुकान, धर्मशाला इत्यादि पर भी वे लिखते हैं, मुल्तानी धर्मशाला, लायलपुरिया नर्सरी, बहावलपुरिया डूंगा–बूगा वाले जबकि यह सब तो पाकिस्तान में ही रह गये। भारत में इनकी क्या पहचान है? पंजाबी समुदाय के लोग जाटों को कड़ी व टेढ़ी नजरों से देखते हैं। जब पंजाबियों की निकासी ही पाकिस्तान से है तो यह एक सच्ची कहानी है। जब चौ. भजन लाल बिश्नोई हरियाणा के सी.एम. थे तब वह जनसभाओं में इन पंजाबियों से कहा करते थे कि आप

भी पाकिस्तान से आये हो और मैं भी, हम सब तो भाई–भाई हैं। तब ये पंजाबी लोग बहुत खुश होते थे। तब उन्हीं पंजाबियों को भजन लाल द्वारा कहे गये पाकिस्तान के शब्द से नफरत नहीं होती थी। सांगवान साहब ने उन्हें कोई गाली तो नहीं दी है। उन्होंने केवल पंजाबियों व खट्टर साहब को उनकी मूल पहचान से संबोधित किया है।

राकेश सरोहा : वर्तमान समय में जाट समाज की सबसे बड़ी कमी क्या है और उसका समाधान कैसे किया जा सकता है।

रतीराम पूनिया : वर्तमान समय में जाट समाज का संगठित होना अति आवश्यक है। यदि आज भी समाज बिखरा हुआ रहा तो जाट समाज को बहुत क्षति होगी और यह बिखराव सिर्फ राजनीतिक पार्टियों की वजह से है। अपनी चौधर व लीडरशिप चमकाने के चक्कर में वे जाट समाज को पीछे धकेल रहे हैं। इसी प्रकार जैसे कि चौ. ओम प्रकाश चौटाला अपने हित के लिए कुछ जाटों को अपने साथ लिए हुए हैं। उध ार चौ. भूपेंद्र सिंह हुड्डा कुछ को अपने साथ लिए हुए हैं। ये जाट नेता अपने अहम के लिए ये सब कर रहे हैं। इसी प्रकार क्षेत्र वाईज बहुतसारे नेता हैं। जब ये लोग अपना अहम छोड़कर समाज के लिए एक मंच पर आयेंगे तब ही जाट समजा का भला होगा। सभी जाट लीडर व चौधरी किस पार्टी में रहे परंतु जब समाज की बात आये तब सब एक जुट होकर, एक मंच से जाट समाज की आवाज बुलंद करें। इसके अलावा राष्ट्रीय स्तर से लेकर ग्राम लेवल तक मजबूत संगठन बनाएं जायें। मेरे विचार में जाट संगठित होकर अपना हक सरकार से ले सकते हैं।

राकेश सरोहा : जाट समाज में लड़के व लड़कियों का बढ़ता लिंग अनुपात जाट नवयुवकों के विवाह में सबसे बड़ी बाधा है। इसके लिए जाट समाज को क्या कदम उठाने चाहिए।

रतीराम पूनिया : जाट समाज में लड़के व लड़कियों का बढ़ता लिंग अनुपात बड़ी समस्या है। इसके दोषी हम खुद हैं। कन्या भ्रूण हत्या करना घिनौना कार्य है। कन्या भ्रूण हत्या पर समाज रोक लगाए ताकि आगे आने वाली पीढ़ी इस समस्या से निपट सके। आज विवाह की समस्या से निपटने के लिए अंर्तजातियां शादी के लिए समाज को इजाजत देनी चाहिए। युवा यदि प्रेम विवाह करते हैं तो उनको अपनाना चाहिए। इस समस्या का समाधान मेरे विचार से तभी हो सकता है जब सरकार व समाज कन्या भ्रूण हत्या को कठोरता से प्रतिबंधित करें।

राकेश सरोहा : जाट समाज में प्रचलित गोत्रों की संख्या करीब 2000 के करीब है। परंतु फिर भी जाट समाज के विवाहों में गौत्र विवाद उत्पन्न हो जाता है। क्या इसके लिए जाटों के विवाह संबंधों में केवल माता और पिता का गोत्र ही प्रतिबंबित होना चाहिये या अन्य कदम उठाने चाहिए?

रतीराम पूनिया : जाट समाज में गोत्र तो करीब 2000 हैं परंतु गोत्र क्षेत्र वाईज हैं। अपने क्षेत्र से बाहर दूर दराज के क्षेत्रों में शादी का प्रयास किया जाना चाहिये और शादी करते समय दादी, नानी का गोत्र न रखा जाये, सिर्फ मां व बाप के गोत्र को छोड़कर अन्य गोत्र में शादी की जाये। देसवाली क्षेत्र रोहतक, सोनीपत, जींद इत्यादि जिलों में तो पड़ोसी गांव तथा गांव में जो दूसरे गोत्र हैं उस गोत्र की लड़की बहू बनकर नहीं आ सकती है। मेरे विचार से इन बातों को भी छोड़ना चाहिए। ऐसा सिरसा, अबोहर, फालिज्का, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़ आदि क्षेत्र में नहीं है। यहां पर गांव में ही रिश्ते हो जाते हैं। बस मां–बाप का गोत्र नहीं मिलना चाहिए। समय के अनुसार जाट समाज को प्रगतिशील सोच दर्शाते हुए अनावश्यक गोत्र विवाद में नही उलझना चाहिए। कुछ समस्या लिंग अनुपात की है। कुछ समस्या समाज ने खड़ी कर रखी है।

राकेश सरोहा : वर्तमान परिस्थितियों में किसानों की दुर्दशा के लिए आप सरकारी नीतियों को कितना दोषी मानते हैं तथा इसका समाधान कैसे किया जा सकता है।

रतीराम पूनिया : वर्तमान परिस्थितियों में किसान की दुर्दशा में सरकारी नीतियां ठीक नहीं हैं। इसकी मुख्य खामियां हैं– स्वामीनाथन की रिपोर्ट लागू न करना। यह बी.जे.पी. सरकार के घोषणा पत्र में यह सबसे अहम मुद्दा था कि बी.जे.पी. सरकार आते ही स्वामीनाथन रिपोर्ट लागू की जायेगी। ऐसा न करने से स्पष्ट है कि सरकार की नीयत किसान के प्रति ठीक नहीं है। किसानों को सरकार द्वारा सभी फसलों के बीच एच. एस.डी.सी. के माध्यम से उच्च क्वालटी के बीज दिये जायें। एच.एस.डी. सी. सरकार की ही एजेंसी है लेकिन यह बहुत कम मात्रा में गेहूं, जौ, चना, कपास व धान के बीजों की बिक्री करती है। एच.एस.डी.सी. की बीज बिक्री से मात्र 20 प्रतिशत क्षेत्र में ही बिजाई हो पाती है। बाकी 80 प्रतिशत क्षेत्र में प्राइवेट प्रोडूसर या किसान को अपने बीज से ही भरपाई की जाती है। एच.ए.यू. द्वारा जो नए बीजों की किस्में निकाली जाती हैं वे भी एच.एस.डी.सी. तैयार नहीं कर पाती है। बीज तैयार करने से पहले किसानों की राय जाननी चाहिए। कृषि विभाग द्वारा सर्वे करवा कर किसानों की इच्छा के अनुसार किस्मों के फसल वाईज बीज तैयार करने चाहिए। खाद जैसे यूरिया, डी.ए.पी., सुरपरफास्फेट, जिंक इत्यादि का स्टाक फसल बिजाई से पूर्व करना चाहिए। वर्तमान सरकार का इस बावत कोई अनुभव नहीं है। इस बारे में हरियाणा के कृषि मंत्री ओ.पी. धनखड़ के ब्यान सुनें तो उनकी अनुभव हीनता स्पष्ट छलकती है।

कीटनाशक : कीटनाशक, फफूदीनाशक जो सबसे अहम मुद्दा है। फसल उत्पादन में कीड़ेमार दवाई व रोग के लिए दवाई के बारे में तो 100 प्रतिशत (प्राइवेट फर्म) कीटनाशक विक्रेताओं पर ही निर्भर है। कृषि विभाग समय–समय पर इनकी चैकिंग व सैंपल बगैरा तो लेते हैं। परंतु कुछ कंपनियां घटिया स्तर के कीटनाशक बनाती है। जिस कीटनाशक से फसल के कीड़े कंट्रोल नहीं होते हैं और किसान की फसल बर्बाद हो जाती है। उदाहरण के तौर पर इसी वर्ष सफेद मक्खी का इतना भारी प्रकोप हुआ जो किसी भी कीटनाशक से कंट्रोल नहीं हुई। नरमा की फसल 50–100 प्रतिशत तक खत्म हो गई। इस बारे में सरकार को एच. एस.डी.सी. हरियाणा, एगरो, आई.एफ.एफ.सी.ओ., कृभको व कृषि विभाग के माध्यम से कीटनाशक की बिक्री करनी चाहिए। यदि प्राइवेट फर्म को कीटनाशक का लाइसेंस दिया जाये तो वह बी.एस.सी. एग्रीकलचर होना चाहिए। जैसे मैडिकल लाईन में मैडिकल स्टोर के लिए बी.फार्मेसी होना जरूरी है।

सिंचाई : ट्यूबवैल के लिए 10 घंटे बिजली सप्लाई होनी चाहिए।

नहरी पानी के लिए : नहरों में पानी सप्लाई व सफाई का शेड्यूल बनाते वक्त कृषि विभाग व किसानों की भागीदारी होनी चाहिए। अप्रैल–मई महीना कपास की बिजाई का मुख्य समय होता है और इन्हीं महीनों में नहर की सफाई की जाती है। इसके कारण बिजाई लेट हो जाती है। लेट बिजाई के कारण फसल का उत्पादन कम होता है।

अनुदान : किसान को खाद, बीज, दवाई, कृषि यंत्र, बागवानी पर सरकार जो भी अनुदान दे उसे किसान के बैंक खाते में जमा करायें। इसमें बहुत Input किसान को बिल्कुल किसी भी Agency के माध्यम से नहीं देना चाहिए। इससे भ्रष्टाचार का डर है।

राकेश सरोहा : जाट समाज के विकास के लिए जाटों की क्या नीति होनी चाहिये तथा इसके लिए आपके क्या सुझाव हैं।

रतीराम पूनिया : जाट समाज के विकास के लिये राष्ट्रीय स्तर से गांव स्तर तक जाटों का मजबूत संगठन बनाना चाहिये। जाटों की समस्याएं संगठन के माध्यम से ही सरकार के सामने रखी जानी चाहिये। जाटों को अपना समय तथा शक्ति आपसी लड़ाई झगड़ों की बजाये बच्चों को उच्च तथा व्यवसायिक शिक्षा दिलवाने पर लगानी चाहिये।

आईए, कौम के प्रति समर्पित कर दें स्वयं को

Mk- deohj flg

एक बार एक कवि किसी रास्ते से गुजर रहा था। रास्ते में उसने एक वृक्ष को जलते हुए देखा। वृक्ष की टहनी पर बैठे हुए दो पक्षियों को वृक्ष के साथ जलते हुए देखकर कवि का कोमल मन द्रवित हो उठा। सहसा कवि के मुंह से ये शब्द फूट पड़ेः

''आग लगी इस वृक्ष में, जलने लागै पात।
पक्षियों तुम क्यों जलो, जब पंख तुम्हारे साथ।।''

कवि के ये शब्द सुनकर पक्षियों ने जो मर्मस्पर्शी उत्तर दिया, उसकी ओर पाठकों का ध्यानाकर्षण अपेक्षित है। जलते हुए पक्षियों ने कवि से कहाः–

''फल खाए इस वृक्ष के, गंदे कीने पात।
आग लगी इस वृक्ष में, जल मरें इसी के साथ।।

पक्षियों द्वारा उस पेड़ के प्रति दर्शायी गई श्रद्धा, उनकी बहादुरी, बलिदान की भावना, समर्पण का भाव, त्याग की पराकाष्ठा और सर्वस्व न्योछावर करने की प्रतिज्ञा किसको भाव–विभोर होने से रोक सकती है? कौन होगा ऐसा मानव जिसका मन उपर्युक्त वार्तालाप सुनने के पश्चात द्रवीभूत न होगा?

जब मनुष्य के इतर प्राणियों में अपने आवास के प्रति समर्पण की ऐसी भावना हो सकती है। तो मानव जाति में क्यों नहीं? प्रश्न इस बात का है कि हम अपनी जाति (मानव जाति) के प्रति कितने वफादार हैं, अपनी कौम (जाट) के प्रति कितने समर्पित हैं और क्या हम जाट होने का फर्ज बखूबी निभा रहे हैं?

किसी कवि ने लिखा है, ''ये जिंदगी है कौम की, तू कौम पे लूटाए जा।'' कौम के लिए कार्य करना और जातिवादी सोच रखना सैद्धांतिक रूप से अलग हैं। जहां एक ओर जातिवाद का अभिप्राय अन्य जातियों का दमन व शोषण करके अपने विकास का रास्ता प्रखर करना है, वहीं दूसरी ओर कौम के लिए कर्मरत होने का अर्थ है– सभी जातियों को सम्मानजनक दृष्टि से देखते हुए अपनी कौम को विकसित करने के लिए प्रयासरत होना। इस प्रकार जिस कौम में हमने जन्म लिया है, उसके उत्थान के लिए, उसके विकास के लिए, उसकी भलाई के लिए और उसके सुनहरे भविष्य के लिए कृत–संकल्प होकर कार्य करते रहना कतई जातिवाद नहीं है।

इसे विधि की विडंबना कहूं या व्यवस्था का विधान कि दुर्भाग्यवश जाति का संबंध जन्म से जोड़ दिया गया है। दुनिया की सबसे बड़ी जम्हूरियत होने के बावजूद हिंदुस्तान में धर्म परिवर्तन संभव है, जाति परिवर्तन नहीं। सही मायने में जातियां केवल दो वर्गों में वर्गीकृत की जा सकती हैंः एक कमेरे की जाति व दूसरी लुटेरे की जाति। समाज की वर्तमान व्यवस्था में जिसे 'जाट' जाति का नाम दिया गया है, वह जाति सदैव कमेरे वर्ग की जाति रही है। इस जाति के मापदण्ड–शौर्य, पराक्रम, त्याग, परिश्रम व दान रहे हैं।

सत्यार्थ प्रकाश में पाखण्ड करते हुए स्वामी दयानंद सरस्वती जी भी भाट को 'देवता' कहकर संबोधित करते हैं। देवता का साधारण सा अर्थ– देने वाला है। इसका विपरीत हुआ लेने वाला अर्थात् 'लेवता'। जाट कभी भी 'लेवता' नहीं हो सकता वह सदैव 'देवता' रहता है। और हमेशा बना रहेगा। इतिहास इस बात का साक्षी रहा है कि जाट कौम कभी दूसरों से मांगने में विश्वास नहीं रखती। यहां तक भी कहा जाता है कि जाट को तो मांगना आता ही नहीं। और यह सत्य है– हमें न मांगना आता है, न ही हम मांगना चाहते हैं।

बड़े खिन्न मन से लिखना पड़ रहा है कि आज पाश्चात्यीकरण के अंधानुकरण में डूबकर कुछ तथाकथित शिक्षित जाट भाई–बहन अपने बच्चों को उनकी जाति/कौम ही बताना भूल गए हैं। या यूं कह लीजिए कि वे इस डर से अपने बच्चों को उनकी जाति का बोध नहीं करा रहे कि कहीं उनके बच्चों को कोई 'जाट' कहकर अपमानित न कर दे। ऐसे भाई–बहनों से मेरी अपील है कि वे अपने बच्चों को निर्भीक व निडर बनाएं, उनमें ऐसी शक्ति विकसित करें कि वे स्वयं को 'जाट' कहने पर गौरवान्वित महसूस करें। वे सीखें कि 'जाटणी' 'सिंहणी' का पर्याय है। उनको बताएं कि JAT stands for Justice, Action and Truth.

स्वयं को 'जाट' कौम का अंश पाकर गौरवांवित होने के पश्चात कर्तव्य–बोध का प्रश्न आता है। इस लेख के आरंभ में ही जिस समर्पण भाव का उल्लेख किया गया है, उस समर्पण भाव से हम कौम की सेवा करें। अपने बालकों को सरदार भगत सिंह, महाराजा सूरजमल, चौ. छोटूराम व सेठ छज्जूराम के किस्से सुनाकर उनकी रगों में बह रहे रक्त की धार को प्रखर बनाने का पुण्य कार्य करें। ऐसा वातावरण विकसित करें कि हमारा बच्चा–बच्चा गर्व व फक्र से कह सके ''मैं जाट हूं और मुझे जाट होने पर गर्व है।''

आईये, अब थोड़ा अंतरावलोकन करें– जरा सोचिए! जाट कौम में जन्म लेकर मैंने कौम के लिए क्या किया है? जाट समाज के उत्थान में मेरा कितना योगदान रहा है? जाट ऐसे ही दूसरे प्रश्न स्वयं से करें। उत्तर की पड़ताल कीजिए और कौम के जज्बे की लाज को बरकरार रखने के लिए आज से ही अपना सुनिश्चित योगदान देना शुरू करें क्योंकि–

''ये जिंदगी है कौम की, तू कौम पे लुटाए जा।''

हां, यह कदापि न भूले कि सहनशीलता, दया व त्याग वीरों के आभूषण होते हैं। 'जाट' सर्वश्रेष्ठ वीर है तो स्वाभावित रूप से उसे धैर्यवान व त्यागी तो बनना ही होगा।

तनाव, चिंता, क्रोध एवं भय से बचने के उपाय

– श्री राजसिंह दहिया

तनाव, चिंता, क्रोध एवं भय पर नियंत्रण पाने के लिए कुछ उपयोगी सुझाव यहां दिए जा रहे हैं :–

1. सकारात्मक दृष्टिकोण : शांतिप्रिय तथा खुशहाल भूमिका निभाता है। इससे आशा, विश्वास तथा स्पष्टता हमारे विचारों एवं कार्यों में झलकती है। हमें सदैव सकारात्मक रूख अपनाने का प्रयास करना चाहिए।

2. विपत्ति की कल्पना न करें : भविष्य में क्या घटने वाला है, विपत्ति अकेले नहीं आती वह अपने साथ भय, चिंता आदि के साथ–साथ सहनशीलता और निदान करने की क्षमता भी लेकर आती है। विपत्ति की कल्पना करके मन को कमजोर न होने दें।

3. भूत एवं भविष्य की चिंता न करें : भूत तो बीत गया है। किए गए चैक की तरह है। भविष्य प्रोमिसरी नोट की तरह अनिश्चित है जिसका नगदीकरण हो भी सकता है और नहीं भी। भूत व भविष्य की चिंता से दुःखी न हों। वर्तमान में जीना सीखें जो आपके हाथ में नकद राशि की तरह है। हमें अपने वर्तमान को खुशनुमा, कर्मशील तथा शांत बनाने का प्रयास करना चाहिए।

4. क्षमाशीलता अपनाएं : शारीरिक, मानसिक व आर्थिक हानि पहुंचाने वाले किसी व्यक्ति के प्रति दुर्भावना न पालें। हमें क्षमा करने के लिए तत्पर रहना चाहिए। किसी तरह की गलती होने पर मांगने में किसी प्रकार का संकोच न करें। भूलना और क्षमा करना तनाव, चिंता, क्रोध तथा भय को नियंत्रित करने का सबसे अच्छा तरीका है।

5. कृतज्ञता की कला सीखें : जब भी हमें कुछ दिया जाए, चाहे वह सलाह ही क्यों न हो, हमें अपनी कृतज्ञता अवश्य प्रकट करनी चाहिए। हमारे मन एवं हृदय में ईश्वर के प्रति धन्यवाद की भावना होनी चाहिए क्योंकि प्रभु ने हमें सब कुछ दिया है और दे ही रहा है।

6. विनोद की भावना अपनाएं : निराशा, उदासी, भय आदि भीतर स्वस्थ विनोद की भावना विकसित करनी चाहिए। कारण, विनोद, और तनाव कभी भी एक साथ नहीं चलते। हमारे जीवन में हंसी और मुस्कान अति आवश्यक है। यह एक शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक व बलवर्धक औषधि है।

7. श्वसन क्रिया को देखें : श्वास के आवागमन को देखते–देखते आप देखने वाले में स्थित हो जाएंगे।

8. ईश्वर में गहरी आस्था रखें : ईश्वर सर्वशक्तिमान है। नित्य हमारा ध्यान रखता है। उसके प्रति गहरी आस्था रखने से दुःख और सुख को सहन करने की क्षमता बढ़ती है। निश्चिंतता आती है।

9. मौन रहने का अभ्यास बढ़ाएं : मौन व्यक्तिगत शांति पाने का समय है। बिना शोर–गुल सुने शांत बैठना एक प्रकार का आध्यात्मिक चिंतन एवं ध्यान है। इससे तनाव, चिंतन, क्रोध तथा भय पराजित होते हैं। उस समय हम चेतना की गहराई में उतरते हैं और शुभ–चिंतन कर पाते हैं।

10. शरीर व मन को शिथिल करना सीखें : श्वासन, योगनिद्रा, ध्यान, ऊँ की ध्वनि की मदद से शिथिलीकरण का आभास होने से हर तरह का तनाव दूर हो जाता है। इनसे चेतना अंतमुखी होने लगती है।

11. दूसरों की सहायता/सेवा करें : यह तनाव मुक्ति का अपने आप समाज हित अर्पित कर देना चाहिए। पर–पीड़ा को हरने का प्रयास करने से अपना दुःख छोटा हो जाता है और हम सुख का जीवन जीने लगते हैं।

MkbV pkV ¼DIET-CHART½

सुबह 5.30ः कोसा गर्म पानी (with Lemon)

6 से 8 बजेः सैर, योगा, Meditation

(इसके बाद 7 बादाम गिरी व अखरोट शाम को भिगोकर सुबह छिलके समेत चबाना)

8.30 से 9 बजेः थोड़ा सा दलिया (without milk)

गाय के घी में भून लें उसमें गाजर, मटर, सोयाबीन, मटर, मेथी व पालक के हरे पत्ते, धनिया के पत्ते, सैंधा नमक डालकर सारी चीजों को उबाल लें।

10 से 10.30 बजेः फ्रूट लेना (पपीता, सेब, संतरा, अमरूद, कीवी की चाट बनाकर खाएं)

12 बजे दोपहरः ईशबगोल का छिलका (एक घंटा पहले पानी से खाना लेने से पहले

सलाद आधा घंटा पहले खाने से पहले

1 बजे (लंच)ः लंच में दाल चपाती, सब्जी व लस्सी (दही को रिडक कर), आटा मिक्स (सोयाबीन, चना, जौ, गेहूं का) बाद में सौंफ खाएं

3 बजेः हल्का कोसा पानी पेट भर कर

4 बजेः सब्जियों का सूप या टमाटर सूप

6 से 7 बजे (सायं)ः सैर या बैठकर हल्की एक्सरसाइज

8 बजे (डिनर)ः (चपाती, घीया, तोरी, कद्दू, टींडा की सब्जियां ज्यादा लें)

(रात के भोजन में दाल, दही न लें)

चटनी : पोदीना, कढ़ीपत्ता, हरा धनिया, तुलसी, आंवला (कच्चा), हरी मिर्च

9.30 बजेः एक कप गाय का दूध (without sugar)

10 बजेः Sleeping (1 पौड़ी, महामृत्युंजय मंत्र)

बोधोत्सव के मायने

– नरेंद्र आहुजा

हम सभी के दैनिक जीवन में हमारे आस–पास ना जाने कितनी घटनायें रोजाना होती हैं जिनके पीछे हमारे लिए कुछ ना कुछ संदेश वा प्रेरणा छिपी होती है लेकिन हम सभी अपनी भौतिकतावादी पाश्चात्य अंधानुकरण की भोगवाद की जीवन शैली में डूबकर इतने संवेदनशून्य हो चुके हैं कि अपने आस–पास की संदेश वा प्रेरणा देती इन घटनाओं से कोई शिक्षा ग्रहण नहीं करते। हम इस तथाकथित विकास की चकाचौंध में सम्मोहित संवेदन शून्यता की हद तक संवेदनहीन हो चुके हैं कि हम भेड़ों के झुंड की भांति विकास के नाम पर विनाश के अंधे कुएं में गिरकर अपने विनाश की ओर अग्रसर हैं। सम्मोहन की यह स्थिति इतनी भयावह हो चुकी है कि हम पाश्चात्य अंधानुकरण करते हुए भोगवाद में फंसकर अपनी पुरातन सनातन वैदिक संस्कृति को भूलते जा रहे हैं। हमें इतना भी बोध नहीं रहा कि कितना भी बड़ा वट वृक्ष क्यों ना हो यदि वह अपनी जड़ों से कट जाता है तो अंततः सूखकर ठूंठ बनकर गिर पड़ता है।

शिवरात्रि का पावन पर्व हम आर्यों के लिए ऋषि बोधेत्सव का पर्व है। वेदों के पुनः उद्धारक ईश्वर के सच्चे स्वरूप के दर्शन करवाने वाले क्रांतदर्शी महर्षि देव दयानंद के अत्यंत प्रखर मेधा बुद्धि युक्त संवेदनशील मन ने छोटी सी घटना से कितना बड़ा संदेश बोध प्राप्त कर लिया और उस समय का बालक मूलशंकर सच्चे शिव की खोज में लग गया और अंततः ईश्वर के सत्य स्वरूप को हम सभी के लिए उपलब्ध करवा दिया। शिवरात्रि की घटना जब मूषक शिवलिंग पर चढ़कर मल मूत्र विसर्जित करते हुए प्रसाद खाने लगते हैं। कोई ऐसी घटना नहीं थी जो पहले ना हुई हो या अब ना होती हो। इसमें कोई नई बात थी तो सच्चे शिव के दर्शन की तीव्र उत्कंठा लिए प्रखर बुद्धि युक्त संवेदनशील बालक मूलशंकर का इस घटना को देखकर बोध पा लेना कि यह जड़ पत्थर से बना शिवलिंग कदापि इस सशष्टि का निर्माता, पालक, सहारक ईश्वर शिव नहीं हो सकता जो इन मूषकों से अपनी रक्षा नहीं कर पा रहा। बस इसी बोध ने बालक मूलशंकर की उस कल्याणकारी सच्चे शिव की खोज की उस यात्रा को प्रारंभ कर दिया।

शिवरात्रि के पुनीत पर्व पर घटी यह घटना ही बालक मूलशंकर को वैदिक संस्कृति प्रचारक, वेदों के पुनः उद्धारक, ईश्वर के सत्यस्वरूप के ज्ञाता, पाखंडों अंधविश्वासों के निर्मूलक, महान समाज–सुधारक, युग प्रवर्तक, आर्य समाज के संस्थापक, क्रांतदर्शी महर्षि देव दयानंद के रूप में परिवर्तित कर गई। इसीलिए आर्य जगत में हम सभी आर्यजन शिवरात्रि के पर्व को 'बोधोत्सव' के रूप में मनाते हैं।

परंतु प्रश्न उत्पन्न होता है क्या हम सभी 'ऋषि बोधोत्सव' के पर्व को सही मायनों में मना रहे हैं। किसी भी पर्व को मनाने का सही अभिप्राय यह है कि हम उस पर्व के संदेश को अपने जीवन में धारण करने का संकल्प लें। एक सामान्य सा वाहन चालक भी अपने आगे चल रही गाड़ी की स्थिति को देखकर अपने वाहन की दिशा को सही मार्ग पर ले आता है और किसी भी संभावित दुर्घटना से वाहन के साथ ही अपनी व अन्य सवारियों की रक्षा करता है। परंतु हम सभी कितने अबोध हैं कि मनुष्य जैसे अनमोल तन को वाहन के रूप में पाकर भी भोगवाद की चकाचौंध के सम्मोहन में मानव जीवन के लक्ष्य से भटककर अपने विनाश की ओर बड़ी तीव्र गति से दौड़ रहे हैं। आर्यों के पथ प्रदर्शक देव दयानन्द ने हमें ईश्वर के सच्चे स्वरूप के विषय में बड़े विस्तार के साथ आर्य समाज के दूसरे नियम में ही बतला दिया। परंतु हमारी स्थिति तो आज भी उसी शिवरात्रि पर सो रहे अन्य लोगों जैसी ही है। बालक मूलशंकर शिव के साक्षात्कार की तीव्र उत्कंठा लिए इस बोध रात्रि के समय जागृत अवस्था में था। हम तो उस समय सो रहे लोगों से अधिक दुर्भाग्यशाली हैं जो ऋषि के दिखाये वेद मार्ग ईश्वर के स्वरूप को जानते हुए भी उस पर नहीं चल पा रहे।

हम आर्य जन स्वयं को देव दयानंद के दयानंदी परिवार का सदस्य और स्वयं को आर्य अर्थात श्रेष्ठ होने का दंभ भरते हैं तो क्या हमने देव दयानंद के दिखाए वेद मार्ग पर चलते हुए आर्य सिद्धांतों को जीवन में अपनाया तथा दूसरों को भी उस वैदिक आर्य पथ पर चलने की प्रेरणा दी। क्या आज भी हम समाज को उन पाखंडों अंधविश्वासों से मुक्ति दिलवा पाये जिनके विरुद्ध संघर्ष करते हुए महर्षि देव दयानंद ने अपने जीवन काल में अनेकों बार विष पिया और अंततः अपना आत्म बलिदान कर दिया। क्या आज भी समाज को हम जड़ पूजा से मुक्त करवा पाये। महर्षि देव दयानंद ने जिस स्वतंत्रता संग्राम की शास्त्र को हाथ में लेकर प्रेरणा दी थी और उनकी प्रेरणा से क्रांतिकारियों को गीता के नाम से प्रसिद्ध अमर ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' को पढ़कर ना जाने कितने शहीदों ने स्वाधीनता के यज्ञ में अपना सर्वस्व प्राणों की आहुति प्रदान कर दी थी। जिसके लिए इतिहास में स्वर्णाक्षरों में स्वीकार किया गया कि देश की आजादी में अस्सी प्रतिशत स्वतंत्रता सेनानी महर्षि देव दयानंद की विचारधारा के अनुयायी थे। परंतु क्या आज हम उस स्वतंत्रता की रक्षा करने में स्वयं को सक्षम पा रहे हैं या काठ की हांडी फिर से गुलामी की आंच पर चढ़ने को तैयार है?

ऋषि बोधोत्सव पर हम सभी को बोध लेना होगा और देव दयानंद द्वारा दिखाए गए आर्य सिद्धांतों के वेद मार्ग पर ना केवल स्वयं चलकर अपितु समाज को भी उसकी प्रेरणा देकर **'कृण्वंतो विश्वमार्यम'** के स्वप्न को साकार करना होगा। पाश्चात्य संस्कृति के भोग मार्ग की चकाचौंध के सम्मोहन से स्वयं को एवं समाज को मुक्त करवाकर पुरातन सनातन आर्य संस्कृति के योग मार्ग पर चलना होगा तभी हम सही मायनों में 'ऋषि बोधोत्सव' को मनाने के अधिकारी हो सकते हैं।

रणबांकुरों की धरती है हरियाणा

– अतुल यादव

(जिस प्रकार 1857 के प्रथम संग्राम में हरियाणा के रणबांकुरों ने दिल्ली को अंग्रेजों से मुक्त कराने में अदम्य साहस का परिचय दिया, उसी प्रकार विश्व के प्रथम व द्वितीय युद्धों में भी अपने जौहर दिखाये। अधिक जानकारी के लिये पढ़ें यह रोचक लेख।)

हरियाणा हमेशा से रणबांकुरों की भूमि रहा है। स्वतंत्रता और स्वाभिमान के लिए यहां पर शौर्य, राष्ट्र प्रेम, बलिदान और वीरता की लंबी परंपरा रही है। 1857 के पहले स्वाधीनता आंदोलन में यहां के लोगों ने अनुकरणीय भूमिका निभाई। दोनों विश्व युद्धों में भी यहां के वीरों ने अपनी बहादुरी का लोहा मनवाया। दुनियाभर में अपने जौहर दिखाने के लिये तत्कालीन अंग्रेज सरकार ने यहां के पांच रणबांकुरों को विक्टोरिया क्रॉस समेत अनेक शौर्य पदकों से नवाजा था। प्रथम व द्वितीय विश्व युद्ध में सुदूर यूरोप के देशों में कई मोर्चों पर बहादुरी से लड़े और दूसरों की सरजमीं पर अपनी बहादुरी का दुश्मन को भी कायल कर दिया। अफ्रीका, यूरोप व मध्य पूर्व में लड़े युद्ध आज भी सैनिक इतिहास में स्मरणीय हैं। मैसोपोटामिया के टिल्ले हों या गैलीपोली का चट्टानी इलाका या पूर्वी अफ्रीका के जंगल, सब जगह हरियाणा के जाट, अहीर, मेव, राजपूत, पंजाबी हिंदू, मुस्लमान व पठानों अपनी वीरता की इबारत लिखी। फलस्तीन की जॉर्डन नदी पर लड़ते हुए झज्जर के गांव ढाकला निवासी रिसालदार बदलू सिंह ने अदम्य वीरता का परिचय दिया और 23 सितंबर, 1918 को अपनी प्राण न्यौछावर कर दिए। एक पहाड़ी दुश्मन ने अपनी स्थिति मजबूत बनाई हुई थी और बहुत से सिपाही उनके शिकार हो रहे थे। हालात पर काबू पाने के लिए बदलू सिंह ने 6 साथियों के साथ दुश्मन का मुकाबला किया। दुश्मन की एक मशीनगन को अकेले ही काबू करते हुए बदलू सिंह बुरी तरह घायल हो गया, लेकिन शहीद होने से पहले उसने दुश्मन की अनेक मशीनगनों को काबू कर लिया तथा उन्हें हथियार डालने के लिए मजबूर किया। बदलू सिंह की इसी शूरवीरता पर उसे मरणोपरांत सर्वोच्च शौर्य पुरस्कार 'विक्टोरिया क्रॉस' से सम्मानित किया गया।

द्वितीय विश्व युद्ध में हरियाणा के युवकों ने और अधिक योगदान दिया। हरियाणवी सैनिकों ने इटली व पूर्वी अफ्रीका में अपने रणकौशल का परिचय दिया। कंपनी कमांडर के घायल होने के बाद भिवानी के गांव बाढड़ा निवासी 6 राजपूताना राइफल्स के 42 वर्षीय सूबेदार रिछपाल राम ने इरीट्रीय में कमान संभाली और 7, 8 व 11 फरवरी 1941 को अपने तीन साथियों के शहीद होने पर भी युद्ध उसी गति से चलता रहा, लेकिन शीघ्र ही दुश्मन के एक हमले में रिछपाल राम ने संघर्ष जारी रखा और अंततः शहीद होने से पूर्व अपना लक्ष्य हासिल कर ही लिया। रिछपाल 'विक्टोरिया क्रॉस' जीतने वाले हरियाणा के दूसरे तथा द्वितीय विश्व युद्ध के भी दूसरे ही सिपाही बने। इसी तरह जिला भिवानी के ही गांव दिनोद निवासी 5वीं इंफ्रैंट्री ब्रिगेड के कंपनी हवलदार मेजर छैलू राम ने अपनी बटालियन द्वारा 19 अप्रैल, 1943 की रात को डिजेबल गार्सी में अपूर्व साहस का परिचय दिया। अपनी एक मशीनगन के साथ छैलू राम शीघ्र ही दुश्मन की भारी गोलीबारी के बीच सामना करने पहुंच गये तथा अकेले ही 3–4 दुश्मनों को ढेर कर दिया और उनकी बटालियन फिर आगे बढ़ती रही। इसी दौरान दुश्मन की गोलीबारी के बीच छैलूराम के कंपनी कमांडर बुरी तरह घायल हो गए। छैलूराम दुश्मन से मुकाबला करते हुए खुले में ही अपने कमांडर की मदद के लिए चले गए तथा स्वयं भी घायल हो गए। उन्होंने स्वयं कंपनी की कमान संभाली तथा अपने साथियों को मोर्चे पर रोके रखा। इसी बीच दुश्मन ने भारी हमला कर दियां अलग–अलग मोर्चो पर अपने सिपाहियों का हौंसला बढ़ाते हुए छैलूराम एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहे। इस युद्ध में गोली के साथ–साथ पत्थरों से भी लड़ाई हुई और छैलूराम बुरी तरह घायल हो गए तथा मरते दम तक कंपनी की कमाल संभाले रखी। इसी बहादुरी को देखते हुए सरकार ने उन्हें 'विक्टोरिया क्रॉस' से नवाजा गया।

बर्मा के रास्ते देश को सुरक्षित रखने में हरियाणवी वीरों ने बहादुरी का परिचय दिया। युद्ध के अंतिम चरणों में दुश्मन ने इंफाल से 10 मील दूर बर्मा में एक महत्वपूर्ण चोटी पर कब्जा कर लिया। कंपनी कमांडर ने इस चोटी पर अधिकार के लिए जिला रोहतक के कलानौर निवासी जमादार अब्दुल हफीज को जिम्मेदारी सौंपी। अब्दुल हफीज ने सैनिकों के साथ मोर्चा संभाला। इसी दौरान दुश्मन की एक मशीनगन ने भारतीय सैनिकों को आगे बढ़ने से रोक रखा था। अब्दुल हफीज एक पैर से घायल होने के बाद भी गोलियों के बीच चलकर मशीनगन तक पहुंचे और अपने प्राण जाने तक अब्दुल हफीज ने सैनिकों का हौंसला बनाए रखा। उसकी बहादुरी के परिणामस्वरूप दुश्मन इस चोटी को छोड़कर भाग गया। बर्मा में अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए 25 जनवरी, 1944 को एक पंजाब रेजिमेंट को जापानी सैनिकों का सामना करने की जिम्मेदारी सौंपी गई। कमान संभाली जिला भिवानी के ही गांव खेड़ी निवासी सूबेदार रामस्वरूप सिंह ने। रामस्वरूप सिंह एक टांग से घायल हो चुका था, लेकिन अपने घावों की परवाह न करते हुए दुश्मन की तीन दिशाओं से हुए आक्रमण का सामना करते हुए केवल एक एल.एम.जी. से दुश्मन से लोहा लेता रहा। हमले में वह बुरी तरह जख्मी हो गया। मरने से पूर्व उसने कई जापानी सैनिकों को मौत के घाट उतारा, इस 23 वर्षीय जवान को मरणोपरांत 'विक्टोरिया क्रॉस' से नवाजा गया।

(दै. ट्रि. से साभार)

इतिहास गवाह है जाट शक्ति का

पाणिनी ऋषि ने हजारों साल पहले अपनी अष्टाध्यायी में लिखा– 'जट् झट् संघाते' अर्थात जाट बड़े जल्दी संघ बनाते हैं। उनका तात्पर्य यह था कि जाट अपनी चौधर (राज) स्थापित करने के लिए बहुत जल्दी संगठित होते हैं। जाट एक अति प्राचीन कौम है जिससे अनेक जातियों का जन्म हुआ। इस बारे में विद्वान इतिहासकार ए.एच. बिगले लिखते हैं, जाट शब्द की व्याख्या करने की आवश्यकता नहीं है। यह ऋग्वेद पुराण और मनुस्मृति आदि अति प्राचीन ग्रंथों से स्वतः सिद्ध है। यह तो वह वृक्ष है जिससे समय–समय पर जातियों की उत्पति हुई।'

जाट जाति एक महान शासक जाति रही, जिसकी बहादुरी का कोई शानी नहीं था। जिस पर राजस्थान इतिहास के रचयिता कर्नल जैम्स टॉड लिखते हैं, उत्तरी भारत में जो जाट किसान खेती करते पाए जाते हैं वे उन्हीं जाटों के वंशज हैं जिन्होंने एक समय मध्य एशिया और यूरोप को हिलाकर रख दिया था। लेकिन इस महान कौम की बड़ी दुश्मन आपसी फूट रही है। जिस पर यूनानी इतिहासकार हैरोडोटस लिखते हैं– संसार के जाटों जैसा बहादुर कोई नहीं बशर्ते इनमें एकता हो। जाट कौम ने केवल शासन ही नहीं किया इस संसार के अधिकतर लोगों के खाना–कमाना भी सिखाया था। जिस पर विद्वान इतिहास शिवदास गुप्ता लिखते हैं 'जाटों ने तिब्बत, यूनान, अरब, ईरान, तुर्कीस्तान, जर्मनी, साईबेरिया, स्केण्डिनोविया, इंग्लैंड, ग्रीक, रोम व मिश्र आदि में कुशलता दृढता और साहस के साथ राज किया और वहां की भूमि को विकासवादी उत्पादन के योग्य बना दिया।'

जाटों ने संसार की एक से एक बहादुर जातियों से केवल लोहा ही नहीं लिया बल्कि उनके विजेताओं को मौत के घाट भी उतारा। चाहे वह महान सिकंदर हो या मोहम्मद गौरी। संसार की एक बहादुर कौम हूण को हराने वाले जाट थे जिस पर चंद्र व्याकरण में लिखा है –अजयज्जयो हूणान अर्थात जाटों ने हूणों पर विजय पाई। जाट बुद्धि बल में भी सर्वोपरि रहे हैं जिस पर अंग्रेजी की पुस्तक 'राईस आफ इस्लाम' में लिखा है 'गणित में शून्य का प्रयोग जाट अरब से यूरोप लाए थे यूरोप के स्पेन तथा इटली की संस्कृति मोर जाटों की देन है।' जाट संसार में महान समाज सुधारक भी हुए हैं। अंग्रेजी की एक अन्य पुस्तक 'राईस क्रिश्यनिटी' में लिखा है, 'कैथोलिक धर्म में विधवा विवाह को मान्यता जाटों के यूरोप आगमन पर हुई।' इस संपूर्ण सच्चाई को भारत के स्वर्गीय राष्ट्रपति जाकिर हुसैन ने इस प्रकार बयान किया, 'जाटों का इतिहास भारत का इतिहास है और जाट रैजिमेंट का इतिहास भारतीय सेना का इतिहास है। पश्चिम में फ्रांस से पूर्व में चीन तक जाट बलवान जय भगवान का रणघोष गूंजता रहा है।'

जाट इतिहास की महानता पर पर्दा उठाते हुए हिंदी समाचार पत्र पंजाब केसरी ने अपने संपादकीय दिनांक 25 सितंबर 2002 को लिखा, जाटों जैसा गौरवशाली इतिहास ढूंढने से भी नहीं मिलेगा। लेकिन इतिहाकारों ने इसे इतना तोड़–मरोड़ कर लिखा है कि शब्दों में व्यक्त करना मुश्किल है। क्या यह सब महज इत्तफाक है? यह कोई इत्तफाक नहीं यह पूरा पौराणिकवादी की काली करतूत तथा जाट कौम की सरासर लापरवाही का ही परिणाम है।

सम्राट कनिष्क कुषाण वंशीय जाट थे, जिनका पश्चिमी चीन तथा अफगानिस्तान तक राज था। संपूर्ण मौर्य वंशीय राज मोर जाटों का था तो गुप्त वंशीय राज धारणा गोत्री जाटों का शासन था। गुप्ता इनको इसलिए कहा गया कि पहले इनकी पदवी गुप्ता, गुप्त, गुप्ती थे जो एक मिलिट्री गवर्नर की होती थी। इसी इतिहास के काले को भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग कहा जाता है। जो केवल जाटों की देन थी। लेकिन पौराणिकवादी इतिहासकारों ने जाटों के इस इतिहास को धूमिल करने के लिए इन जाट राजाओं को शूद्र तक लिख डाला। वास्तव में इस इतिहास का टर्निंग प्वाइंट सम्राट अशोक मोर के कनिष्क शासक पुद्ध व हद्रथ की हत्या उसी के विश्वासपात्र ब्राह्मण सेनापति पुष्यमित्र द्वारा करने पर है जब पुष्यमित्र ने ब्राह्मण धर्म को राजकीय धर्म बनाकर बौद्ध धर्म के विनाश के लिए इसके विरोध में ब्राह्मण धर्म की रचना हुई जिसमें सभी पुराण स्मृतियां व अनेक पाखंडवादी ग्रंथों की रचना की गई।

जाटों को खुश करने के प्रयास भी होते रहे जिसमें देव संहिता जैसे ग्रंथ लिखकर जाटों की महानता गाई गई तथा जाटों की उत्पति शिव की जाटाओं से भी बतलाई गई लेकिन बाद में शंकराचार्यों की कूटनीति को साकार करने के लिए माऊंट आबू पर्वत (राजस्थान) पर बृहत यज्ञ रचाकर अग्नि कुण्ड पूजा के बहाने जाटों से ही कुछ लोगों की राजपूत नाम की एक नई जाति पैदा कर दी। उसके बाद भी पौराणिक वाद को चैन नहीं पड़ा जबकि सच्चाई यह है कि न तो जटाओ से जाट पैदा हुए। जटाओं से तो केवल जुएं ही पैदा हो सकती है और न ही अग्नि कुंड से राजपूत पैदा हुए। अग्नि कुण्ड से केवल राख ही पैदा हो सकती है। हालांकि कुछ निष्पक्ष इतिहासकारों ने मोर तथा गुप्तवंशीय राजाओं को जाटा माना है जैसे कि डा. जेपी जायसवाल, विद्वान दशरथ शर्मा व डा. एसडी गुप्ता आदि ने। स्वर्गीय डा. बीएस दहिया ने जाटों को इस इतिहास पर विवेचनात्मक इतिहास 'दी जाट एनसियंट रूलर्ज' की रचना की। पाकिस्तान के करांची से चौ. उमररसूल ने बताया कि इस इतिहास का पाकिस्तान में उर्दू में अनुवाद हो चुका है और वहां पर पाकिस्तान के जाटों में सरदार भगत सिंह, चौ. छोटूराम और डा. बीएस दहिया के इतिहास को प्रमुखता से याद किया जाता है। प्रमाणिक सत्य है कि चित्तौड़ के शासक गहलोत गोत्री जाट

थे जो बलवंशी थी। एक बार सिसौद गांव को राजधानी बनाने पर उनका एक वंश सिसोदिया भी कहलाया।

उदयपुर का राज भी इन्हीं गहलोत गौत्री जाटों का था। इसी वंश से योद्धा सज्जन सिंह ने महाराष्ट्र में सितारा रियासत की स्थापना की और भौसलमेर पर कब्जा होने पर वहां यह खानदान कहलाया। जिसमें छत्रपति शिवाजी पैदा हुए। महायोद्धा शब्द से ही बिगड़कर वहां के मराठा शब्द की उत्पत्ति हुई। वहां भी पौराणिक वाद ने शिवाजी का पीछा नहीं छोड़ा और इन्हें बतलाया कि इतिहास इन्हें शूद्र लिखेगा इसलिए ब्राह्मणों की सलाह पर शिवाजी ने काशी के ब्राह्मणों को बुलाकर उनके हाथ राजतिलक कराने के लिए 6 जून 1666 को रायगढ़ में ब्राह्मणों को चार करोड़ छब्बीस लाख रूपये रिश्वत के तौर पर दिए गए। लेकिन फिर भी ब्राह्मणों के मुखिया गंगाभट्ट ने शिवाजी का राजतिलक अपने हाथ के अंगूठे के बजाए अपने पैर के अंगूठे से किया। यह सब होने पर भी आज तक जाटों ने शिवाजी को जाट नहीं माना। इसी चित्तौड़ के गहलोत खानदान से समरसिंह के बेटे ने नेपाल में जाकर अपना राज स्थापित किया और राणा की पदवी धारण की जो वंश अभी तक चला आ रहा है। जिसमें पिछले वर्षों मारा–मारी हुई थी लेकिन जाटों ने अपने इस इतिहास पर न कभी विश्वास किया और नही गर्व।

बड़े ही दुख की बात है कि आज जाट शिक्षित होने पर भी यह कहते सुने गए हैं कि इस इतिहास के क्या प्रमाण हैं? जबकि इस इतिहास के प्रमाण भारत से लेकर यूरोप तक बिखरे पड़े हैं। जाटों का दुर्भाग्य रहा कि इन्होंने कभी भी लेखकों का सम्मान नहीं किया। इसीलिए जाटों के इतिहास को संगठित करने के लिए कोई लेखक नहीं मिला जैसा कि राजपूत, मराठा और सिखों को मिले। इसी कारण आज शिक्षित जाट भी यह सवाल करते पाए जाते हैं कि राजा महेंद्र प्रताप कौन थे? क्या राजा नाहर सिंह जाट थे? आदि–आदि राजस्थान इतिहास के रचेयता कर्नल जैम्स टॉड मानते हैं कि राजस्थान में राजपूत राज आने से पहले वहां जाटों का राज था क्योंकि छठी शताब्दी में ब्राह्मणों के आबू पर्वत कर्म कांड के दौरान राजपूत संघ बनने के लगभग पांच सौ साल बाद ही राजपूत अपने आपको स्थापित कर पाए। दिल्ली में जब जाट राजा अनंगपाल तोमर का राज था जिनके कोई पुत्र नहीं था।

इसलिए गंगा स्नान जाने से पहले अपने दोहते पश्थ्वीराज चौहान को वह अपना राजपाट संभलवा गए परंतु उनकी वापसी पर उसी पश्थ्वीराज ने राज लौटाने से इंकार कर दिया, जिस पर जाटों में आपस में भारी खून–खराबा हुआ था। इसके बाद कुछ तोमर और चौहान जाटों के दल पलवल तथा मथुरा के पास जाकर बस गए जिनके आज भी वहां पर बहुत सारे गांव हैं। अंग्रेजी की पुस्तक 'सरदार बल्लभ भाई पटेल' में लिखा है कि गुजरात में सिद्धराज राजा का शासन था। वहां बार–बार खाद्य पदार्थों की कमी पर बारहवीं शताब्दी में दोआबा (उत्तर प्रदेश) से 1800 जाट किसान परिवारों को गुजरात के कर्मसाद क्षेत्र में छोटे–छोटे बारह गांव बनाकर तथा जमीन पट्टे पर देकर बसाया गया था।

जिस पर ये जाट पट्टीदार कहलवाए और उसी से बाद में वे पटेल कहलाए। इन्हीं परिवारों में से एक परिवार सरदार पटेल के पूर्वजों का था लेकिन जाटों ने पटेल को कभी जाट नहीं माना। फिर भी गूर्जर भाइयों ने उन्हें अपनाने की कोशिश की है। अंग्रेजी पुस्तक 'मुगल इम्पायर इन इंण्डिया' में साफ–साफ लिखा है कि 'दूसरी पानीपत की लड़ाई के योद्धा हेमू का असली नाम बसंतरा था जो अलवर क्षेत्र में तिजारा के पास देवती गांव का रहने वाला जाट जमींदार प्रणपाल का लड़का था।' लेकिन लोगों ने इसे बलिया व बकाल तक लिख डाला। ब्राह्मणों ने इसे ब्राह्मण भी घोषित करने का प्रयास किया जिसने एक महीने तक दिल्ली पर शासन करके विक्रमादित्य की पदवी धारण की थी लेकिन जाटों ने कभी उनको जाट नहीं कहा। ऐसे अनेक उदाहरण हैं।

जब मोर वंशीय, गुप्त वंशीय (धारण) शासकों तथा बैंस वंशीय हर्षवर्धन (जाट सम्राट) को पौराणिकवादी इतिहासकारों ने उन्हें शूद्र लिख दिया तो स्वाभिमान जाट कौम अपनी अज्ञानता में पीछे हट गई और उन्हें शूद्र वर्ण की जातियों ने अपनाना आरंभ कर दिया। परंतु खेद है कि आज पाणिनी ऋषि से सूत्र 'जट् झट् संघाते' के विपरीत जाट कौम आज अपने चरम बिखराव पर है। क्योंकि उसे अपने इतिहास का ज्ञान न होने तथा पूर्वजों पर विश्वास न होने के कारण उनमें अनेक विचार व धारणाएं बन चुकी हैं। हिंदू जाट दूसरे धर्म के जाटों को जाट ही नहीं मानते जबकि उन्हीं में जाति विरोधी अनेक विचारधाराएं पैदा हुई जैसे कि आर्यसमाजी, साम्यवादी, राधा स्वामी, निरंकारी, ब्रह्मकुमारी आदि जो आज जाति को ही मानने को तैयार नहीं तो फिर कौम का भला भी कैसे होगा? जबकि वास्तव में हिंदू जाट आज बहुत बड़ा पाखण्डवादी होता जा रहा है। सिख जाट अपने को सर्वश्रेष्ठ मानता है तो यूपी का जाट सिख जाट को मानने को तैयार नहीं। हरियाणा का जाट अपने आपको और भी पक्का जाट समझता है तो राजस्थान के जाट को दोयम दर्जे का समझता है। अल्पसंख्या में रहने वाले जेएंडके, हिमाचल प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार व आंध्र प्रदेश आदि के जाट की तो कोई पूछ ही नहीं करता। न ही उन्हें पता है कि इन राज्यों में भी उनके भाई रहते हैं। हिंदू जाट को तो शायद पता ही नहीं कि इसी देश में बौद्ध, जैन, इसाई और मुस्लिम जाट भी है। हमें याद रखना होगा कि जाट केवल जाट है चाहे वह किसी भी धर्म व पंथ का मानने वाला क्यों न हो। क्योंकि यह खून का रिश्ता है और यह रिश्ता दुनिया में सबसे बड़ा माना गया है। जाट की मूल भावना समानता पर आधारित है जो गणतंत्र की पक्षधर है। भविष्य में जाट कौम को बचाना है तो हमें अपनी भाईचारा और सौहार्द बनाना ही होगा अन्यथा इसके अलावा कोई चारा नहीं। इसलिए गर्व से कहो और समझो कि हम सभी जाट हैं। अपनों को अपनाओ और उन्हें पराया मत जानो। सभी हिंदू, मुसलिम और सिख जाट एक हो!

विश्व के सबसे बड़े लोकतात्रिंक देश भारत को अब सबसे अच्छे लोकतंत्र की जरूरत

– डॉ० वेद प्रकाश वैदिक

भारत दुनियां का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, और उसमें सफल भी हुआ, पर अब इसे विश्व का अच्छा लोकतंत्र अपने को साबित करना है। इसके लिए नागरिक एवं संवैधानिक हर स्तर पर प्रयोग प्रारम्भ भी हो चुके हैं। इसी क्रम में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है राजनीतिक दलों को सूचना के अधिकार के दायरे में लाने का वायदा। राजनैतिक दलों को सूचना के अधिकार के तले लाने के संदर्भ में सर्वोच्च न्यायलय ने जब सरकार से पूछा कि इस बारे में आपकों क्या कहना हैं, तो सरकार ने कहा कि यदि देश के राजनैतिक दल इस अधिकार के तले रख दिए गए तो वे ठीक से काम नहीं कर पाएंगे। विरोधी दल एक–दूसरे के खिलाफ सूचनाएं निकलवा कर उनका जीना हराम कर देंगे। सरकार ने वास्तव में ठीक कहा लेकिन काफी कम कहा है।

मैं यह मानता हूं कि यदि अनेक सरकारी विभागों की तरह इन दलों के बारे में भी लोगों को सब बाते मालूम पड़ने लगेंगी, तो ये दल काम करने ही बंद कर देंगे। इनकी दुकानों पर ताले पड़ जाएंगे। वास्तव में हमारे राजनीतिक दल ही भ्रष्टाचार के सबसे बड़े अड्डे है। सरकार में जितना भ्रष्टाचार होता है, उसकी जड़ इन दलों में ही होती है। आजकल रानीति का धंधों में सबसे बड़ा धंधा है। इसमें करोड़ों–अरबों रुपया रोज आता है और रोज जाता है। कोई हिसाब रखा नहीं जाता। न खाता, न बही। जो नेता कह दे, वही सही।

दलों के नेता मंत्रियों, सांसदों और विधायकों से भी बाकायदा वसूली करते हैं। ये लोग सरकारी अफसरों से चौथे वसूलते हैं। अफसर भी बेखौफ होकर हाथ साफ करते हैं। सारी व्यवस्था में भ्रष्टाचार ही शिष्टाचार बन जाता है। ऐसी स्थिति में इन दलों के संपूर्ण आय–व्यय को सार्वजनिक करना भारतीय राजनीति के शुद्धिकरण का पहला उपाय कहेंगे।

दलों की शुद्धता जरूरी: राजनीतिक दलों को सार्वजनिक संस्थान (पब्लिक अथारिटी) नहीं मानना सबसे बड़ा ढ़ोंग है। सरकारी विभागों से भी ज्यादा सार्वजनिक कोई है तो ये राजनीतीक दल हैं। इनकी वित्तीय स्थिति ही नहीं, इनकी आंतरिक बहस, निर्णय और उसकी प्रक्रियाएं भी सार्वजनिक की जानी चाहिए। इनमें आंतरिक लोकतंत्र को बढ़ावा तभी मिलेगा। अभी हमारे इन प्राइवेट लिमिटेड कंपनियों की तरह काम करते हैं। जैसे कंपनियां आयकर विभाग को अपना झूठा–सच्चा हिसाब दे देती हैं, ये दल भी दे देते हैं सूचना के अधिकार से सभी दलों को बड़ा परहेज है, क्योंकि कुछ अपवाद को छोड़कर सभी दल भ्रष्टाचार के पहाड़ पर सवार हैं।

यह कहना भी पर्याप्त नहीं है कि चुनाव आयोग इन दलों पर निगरानी रखता है। आयकर विभाग और चुनाव आयोग को कौन चलाते है ? अफसर लोग! उनकी क्या हैसियत है कि वे इन नेता नामक निरकुंश एरावतों पर अंकुश लगाएं ? इन दलों की सभी गतिविधियों–आय–व्यय, पार्टी–चुनाव, पार्टी–निर्णय, पार्टी–बहस आदि का यदि पता सीधा जनता को चलता रहे तो ये पार्टियां शुद्ध, सवस्थ और मजबूत होंगे और भारत का लोकतंत्र दुनियां का सबसे बड़ा ही नहीं, सबसे अच्छा लोकतंत्र भी बन जाएगा। इस कड़ी में शिक्षा में लोकतंत्रीय कदम भी जरूरी है।

शिक्षा में लोकतंत्र का प्रयास: इलाहाबाद उच्च न्यायालय के जज सुधीर अग्रवाल ने अत्यन्त क्रांतिकारी फैसला दिया है। जो काम सरकार को करना चाहिए, जो काम प्रधानमंत्री और सभी मुख्यमंत्रियों को करना चाहिए, जो काम देश में शिक्षा का नक्शा बदल देगा, वह काम अकेले जज सुधीर अग्रवाल ने कर दिया है। उन्होंने जो किया है, वह अभी सिर्फ उत्तर प्रदेश पर लागू होगा लेकिन भारत के प्रधानमंत्री और सभी मुख्यमंत्रियों को चाहिए कि वे फैसले से प्रेरणा लेकर इसे सारे देश पर लागू करें।

ये फैसला क्या है ? फैसला यह है कि जितने भी सरकारी कर्मचारी हैं, जितने भी मंत्री, सांसद, विधायक और पार्षद हैं और जितने भी न्यायधीश हैं, जितने भी लोग सरकार से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं, उन सबके बच्चे सरकारी स्कूलों में ही पढ़ेंगे। यदि सरकारी प्राथमिक शालाओं में वे अपने बच्चों को नहीं भेजते हैं, तो उन्हें सरकार को हर माह उतना हर्जाना देना होगा, जितनी फीस वे निजी स्कूलों में भरते हैं। उन अफसरों की वेतन–वृद्धि और पदोन्नति भी रोक दी जाएगी। इस प्रावधान को लागू करने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार छह महीने की मोहलत दी गई है। यह फैसला मेरे लिए ही नहीं, हर विचारक के लिए गर्व का विषय है।

इसकी भी जरूरत: हमारे विचार परमाणु बम से भी ज्यादा ताकतवर होते हैं। दुनिया को बदलने के लिए विचार की ताकत सबसे बड़ी ताकत है। मैंने यह भी लिखा था कि प्राथमिक और माध्यमिक शालाओं में अंग्रेजी माध्यम की पढ़ाई पर कानूनी प्रतिबंध होना चाहिए। इस फैसले को यदि उ0प्र0 की अखिलेश सरकार लागू कर देगी तो अखिलेश का नाम भारत के इतिहास में रोशन हो जाएगा। अखिलेश को नेता मानना सभी नेताओं की मजबूरी हो जाएगी। शिक्षा में क्रांति की राष्ट्र के उत्थान का मूल–मंत्र है। राष्ट्रोत्थान के इस बड़े काम की नींव रखने वाला अखिलेश नेताओं का नेता कहलवाएगा, लेकिन मुझे आसार उल्टे ही नजर आ रहे हैं। जिस शिक्षक शिवकुमार पाठक की याचिका पर यह फैसला आया है, उस पर उल्टे–सीधे आरोप लगा कर उस मुअत्तल कर दिया गया है। मेरी राय में जज सुधीर अग्रवाल और शिवकुमार पाठक को देश के उच्चतम सम्मानों से सुशोभित किया जाना चाहिए था।

आरक्षण का चारा लोकतंत्र के लिए घातक: इन दिनों गुजरात में चल रहा आंदोलन इस देश को किस दिशा में ले जाएगा ? उनकी मांग है कि इस 27 प्रतिशत की बंदरबांट में उनको भी हिस्सा मिले। यदि जाट, गूजर, कम्मा, वोकालिग्गा, रेड्डी आदि खेतिहर जातियां अपने लिए आरक्षण की मांग कर रही हैं तो पटेलों ने क्या गुनाह किया है? लेकिन मुख्य प्रश्न यह है कि क्या आरक्षण से वाकई किसानों को फायदा होगा ? पहला प्रश्न यह है के कुल सरकारी नौकरियां हर साल कितनी निकलती हैं? प्रदेशों में कुछ सौ। इनके 27 प्रतिशत में से पटेलों का प्रतिशत कितना होगा ? इन सौ–पचास नौकरियों के लिए स्वाभिवानी पाटीदार किसान लोग याचकों की पंक्ति में क्यों खड़े हों? जो पिछड़े नौकरियां लपक लेते हैं, उनमें से ज्यादातर मालदार, ताकतवर, सुशिक्षित माता–पिता की संतान होते हैं वे किसी भी रूप में पिछड़े नहीं होते। वे अपनी जात के पिछड़े नहीं होते। वे अपनी जात के पिछड़ों का हक मारते हैं। इन्हें ही अदालत ने 'मलाईदार परत' नाम दिया है। ये सारी मलाई चाटने वाले लोग आरक्षण के नाम पर अनी जातियों को आंदोलन की भट्टी में झोंक देते हैं। यह आरक्षण अयोग्यता और भ्रष्टाचार का जनक है। यदि आज डॉ0 राममनोहर लोहिया और डॉ0 अंबेडकर जिंदा होते तो वे आरक्षण की इस भ्रष्ट व्यवस्था को समूल उखाड़ फेंकते। सरकारी नौकरियों से सभी प्रकार का आरक्षण खत्म करने के लिए अब सर्वोच्च न्यायालय में कोई याचिका लगाई जानी चाहिए। आरक्षण सिर्फ आर्थिक दृष्टि से असमर्थ लोगों के बच्चों को दिया जाना चाहिए। आरक्षण का आधार जन्म नहीं, कर्म होना चाहिए। जन्म के आधार पर आरक्षण देना मनुष्यों को मवेशी बनाना है। जैसे मवेशियों को थोक में चारा डाला जात है, वैसे आरक्षितों को नौकरियों का चारा डालना घोर अपमान है, एक प्रकार से अर्योग्यता को प्रोत्साहन है।

फिर भी कह सकते हैं कि कुछ खट्टे–मीठे ही सही इन कदमों ने देश की जड़ता को हिलाना प्रारम्भ तो कर दिया है। जरूरत है देश के नागरिकों को धैर्य पूर्वक आदर्श राष्ट्र की दिशा में अपने कर्तव्य पालन करने की।

We Are Proud of Dr. Sarita Malik, HCS

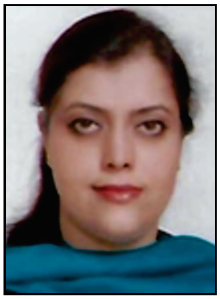

The Jat Sabha Chandigarh/Panchkula extends heartiest congratulations to Dr. Sarita Malik alias Sonia Malik for her excellent achievements in the field of education, sports and administration. A merit scholarship holder with an excellent academic record with Masters and Ph.D. Degree in Psychology with a specialization in Child Psychology-Life Span & Development Psychology, Industrial Psychology and Research Methodology & Statistic. Qualified UGC NET in 1995 with distinction and entered into Haryana Civil Services in the year 2002 after attaining coaching classes in Jat Sabha Chandigarh and did LLB. while in service with 1st Class. An outstanding sportsperson herself, displayed her managerial skills during International Games by ensuring victories of Indian Women Female Wrestling Team in her capacity as Manager/Observer as under: -

- **Manager of Indian Senior Women Wrestling Team in the Dave Schultz Memorial International Wrestling Tournament held at Colorado Springs (USA) in February, 2003.**
- **Observer with Indian Wrestling Team during Olympic Games Athens (Greece) in September, 2004 and also Senior Observer in 18th Senior Asian Wrestling Championship-2005 "Taishan Cup" held at Wuhan, China in May, 2005.**

Dr. Sarita Malik being a life member of the Jat Sabha along with her minor son Parth Malik always extends her whole-hearted support to all activities of the Sabha inclusive of making voluntary contributions during every annual Basant Panchmi function. She has made a maximum contribution of more than thousand books in the library of Jat Sabha, thus benefitting many students. She is presently on deputation with U.T. Chandigarh and is posted as Controller of Printing & Stationary, Director Sports as well as Director Beant Singh Memorial Society, U.T. Chandigarh.

Jat Sabha Chandigarh/Panchkula shall always continue to wish her good luck and sublime success in all times to come.

List of New Life Members of Jat Sabha Chandigarh/Panchkula

Sh. Vishal Nehra	#A-100, Sector 36-A, Suncity, Rohtak	11000.00
Sh. Jitendar Chaudhary	Flat No. 602-A, GHS 105, Sector 20, Panchkula	11000.00
Sh. Ajit Singh Hooda	# 11/2-C, Rail Vihar, MDC, Sector 4, Pkl	11000.00
Dr. Vivek Bhadoo	# 1, Civil Hospital, Sector 6, Pkl	11000.00

List of Donations for Construction of Building

Sh. Laxman Singh Phogat	# 195, NAC Manimajra	2300.00
Sh. Shamsher Sandhu	# 553, Sector 7, Karnal	2100.00
Dr. M.S. Malik	# 222, Sector-36, Chandigarh	1100.00
Sh. Randhir Singh	# 1068, Sector 21, Panchkula	1100.00
Sh. Chanderbhan Pannu	# 1973, Sector 15, Panchkula	1100.00
Sh. Ram Pal Sheokand	# 780, Sector 26, Panchkula	1100.00
Sh. Naresh Kumar	# 91/3, MDC Sector 5, Panchkula	1100.00
Sh. R. R. Sheoran	# 334, MDC, Sector 4, Panchkula	1100.00
Sh. J. S. Dhillon	# 1330, Sector 21, Panchkula	1100.00
Sh. Satbir Dhankhar	# 1197, Sector 11, Panchkula	1100.00
Sh. R. K. Malik	# 969, Sector26, Panchkula	1100.00
Sh. Raj Singh Dahiya	#326, Sector 8, Panchkula	1100.00
Sh. B. S. Gill	# 43, Sector 12-A, Panchkula	1100.00
Sh. Raghbir Singh Siwach	#1049, sector 44, Chandigarh	1100.00
Sh. Rajender Singh Kharb	# 3, Golden Enclave, Zirakpur (Pb.)	1100.00
Sh. M. S. Sehrawat	# 183, NAC Manimajra	1100.00
Sh. K. P. Singh	# 693, Sector 16, Panchkula	1100.00
Sh. Jora Singh Deswal	# 621, Amrawati Enclave, Panchkula	1100.00
Sh. Manbir Singh Sangwan	# 400, Sector 27, Panchkula.	1100.00
Attar Singh Puwar	# 969, Sector 26, Panchkula	1100.00
Sh. Satish Kumar	# 1348, Sector 39-B, Chandigarh	1100.00
Sh. Mahendar Narwal	58, Subhash Nagar, HMT Pinjore	1100.00

चौ. छोटूराम के उत्थान का कारण

–चौ. कृष्ण चंद्र दहिया

(चौ. छोटूराम की 71वीं पुण्य तिथि (09 जनवरी 2015 पर विशेष लेख)

ब्रिटिश पंजाब में वर्ग संघर्ष शहरी बनाम देहात हो गया था। पंजाब में अधिकतर व्यापार बणिया, क्षत्रिय और अरोड़ा के हाथ में था। प्राय शहर में रहते थे। ये चतुराई से काम लेते थे। साफ तौर पर पंजाब में वर्ग संघर्ष शहरी बनाम देहाती था। क्योंकि ब्रिटिश पंजाब की सबसे बड़ी जाति जाट थी इसलिए यह स्वभावित था कि कोई हिंदु–मुस्लिम–सिख जाट नेता देहाती वर्ग की अगुवाई करता।

1900–1901 में लैंड एलाय नेशन एक्ट ने आर्थिक रूप से देहात व शहरी वर्ग को धार दे दी।

ऑनरेरी कर्नल हयात टिवाणा ने पंजाब मुस्लिम एसोसिएशन बनाई जिसका मकसद था शहरी व्यापारियों से किसानों की रक्षा की जाए। उन्होंने कहा कि देहाती सैनिक जातियां कुल रेवेन्यू का 99 प्रतिशत देती हैं और भारतीय सेना को 2/3 सैनिक देती है। उन जातियों के आपस में व सरकार से संबंधों पर राजनैतिक सुधारों से नुकसान हो रहा है।

इसी प्रकार एक थी जाट सिख एसोसिएशन जिसके मैंबर थे चौ. लाल चंद, चौ. छोटूराम, स. बिशन सिंह, स. गुरदीत सिंह, स. जनेजा सिंह। इस एसोसिएशन की भी चिंता थी कि शहरी पढ़े लिखे वर्गों का दबदबा पंजाब एसैंबली में नहीं होना चाहिए। ''इस सबका असर ये पड़ा कि इंडिया एक्ट 1919 में शहरियों को मात्र 13 व देहात को 64 सीटें मिली''।

शहरी सूद खोर व किसान की दूरी का कारण कर्जदारी था। इस कर्जदारी का मूल कारण सरकार का रेवेन्यू सिस्टम था। ''वैसे तो सारी दुनियां में किसान का शोषण धर्म–उपासक, शासक व व्यापारी जातियों ने किया है। किसान उसी दिन से इन वर्गों का शिकार होने लगा था जब खेती की शुरुआत हुई''।

''भयंकर अकालों के बावजूद ब्रिटिश हुकुमत ने 1850 में पंजाब के किसान से 15 लाख, सन् 1871 में 171 लाख व 1885 में 300 लाख रेवेन्यू लिया''।

नोट : ये बढ़ोतरी 2000 प्रतिशत थी और रुपये का सिक्का चांदी का था।

''ब्रिटिश पंजाब के हर जिले में रोजाना की जरूरत के लिए किसान को सूदखोर पर निर्भर रहना पड़ता था।'' ''किसान व बहारी दुनिया के बीच सूदखोर ही बिचौलिया था''। ''ब्रिटिश पंजाब में कहावत थी कि बिन गुरु निर्वाण नहीं और बिन साहूकार साख नहीं''। ''सूदखोरी के कारण ब्रिटिश पंजाब में 1866–97 के बीच कुल 40 मिलियन एकड़ में से 6.5 मिलियन एकड़ भूमि बेची जा चुकी थी और 11.7 मि. एकड़ भूमि गिरवी रखी जा चुकी थी''।

''सन् 1893 में एक बड़े किसान ने साहूकार से 936 रु. उधार लिए जो 1895 में 30,000 रु. हो गए। साहूकार ने किसान की 284 एकड़ भूमि ले ली''।

उस वक्त के अंग्रेज सैटलमैंट अफसर ने लिखित रूप से हुकुमत को चेतावनी देते हुए कहा था, ''मैं इस बात की तरफ ध्यान दिलाना चाहूंगा कि किसानों ने हमारे कानूनों को 36 साल भुगता है जो मात्र 40,000 बणियां से परेशान हैं और इस बणियां से सरकार को कुछ नहीं मिलता''।

किसानों के सामने एकजुट होकर कुछ करने की चुनौती आ गई है ''ये किसान सूदखोर बणियां के खिलाफ खड़े होने की ताक में हैं। क्या कभी कोई कहेगा कि हमने हिंदु–सिख–मुसलमान किसान के लिए कभी कुछ किया है।''

''कर्ज व डिग्री के 88 प्रतिशत मामले 100 रुपए से नीचे के हैं। मेरी जानकारी में किसी स्थानीय शासनकाल में किसानों की भूमि की इस तरह डिग्री नहीं हुई जैसे अब पंजाब में हो रही है।

स्पष्ट रूप से हिंदु–सिख–मुस्लिम जाट ही पंजाब का 90 प्रतिशत किसान था। यानि मामला जातीय भी था। ऐसे में किसी नेता का उभरना वक्त की मांग थी जो धर्म व आस्था को निजी मामला बता कर पद दलित किसान को मैदाने जंग के लिए तैयार कर सके। सर फजले हुसैन व सर छोटूराम ने युनियनिष्ट पार्टी का गठन किया जिसका धरातल मुस्लिम किसान एसोसिएशन व जाट सिख एसोसिएशन पहले से तैयार कर चुकी थी। सर छोटूराम एक ऐसे भारतीय नेता के रूप में उभरे जिनका प्रशासनिक अनुभव 23 साल रहा। भारत में उस वक्त इतने लंबे समय का प्रशासनिक अनुभव किसी और नेता का नहीं था। उनके संघर्ष व उनके द्वारा पास करवाए गए कानूनों को जाट कभी भुला नहीं सकते। ''पाकिस्तान का किसान आज भी सर छोटूराम को हर रोज आदर के साथ याद करता है।''

सर छोटूराम मर कर भी जब तब तक जिंदा रहेंगे जब तक जाट को ठोकर लगती रहेगी। वे महानतम जाट थे।

(नोट : लेखक Jat-Iran, Sumer & Indus Civilization, प्राचीनतम) भारत को जाट की देन व जाट पूर्वजों का इतिहास के लेखक हैं। निकट भविष्य में उनकी किताब ''रहबरे आजम छोटूराम'', ''फिर कैसे बना पाकिस्तान'' आयेगी।)

सम्पादक मंडल

संरक्षक : डा. एम.एस. मलिक, आई.पी.एस. (सेवानिवृत)
सम्पादक : श्री गुरनाम सिंह, आई.एफ.एस. (सेवानिवृत)
सह–सम्पादक : डा॰ राजवन्तीमान
साज सज्जा एवं आमुख : श्री आर. के. मलिक
प्रकाशन समिति : श्री बी.एस. गिल, मो० : 9888004417
श्री जे.एस. ढिल्लो, मो० : 9416282798
वितरक : श्री प्रेम सिंह, कार्यालय सचिव, जाट भवन, चण्डीगढ़

जाट भवन 2–बी, सैक्टर 27–ए, चण्डीगढ़
फोन : 0172–2654932 फैक्स : 0172–2641127
Email : jat_sabha@yahoo.com

Postal Registration No. CHD/0107/2015-2017

RNI No. CHABIL/2000/3469

मुद्रक प्रकाशन एवं सम्पादक गुरनाम सिंह ने जाट सभा, चंडीगढ़ के लिए एसोशियटिड प्रिन्टर्ज़, चंडीगढ़, फोन : 0172–2650168 से मुद्रित करवा कर जाट भवन, 2-बी, मध्यमार्ग, सैक्टर 27-ए, चंडीगढ़ से प्रकाशित किया।